ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 4 जुलाई-अगस्त 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन का अध्ययन
–निमेश कुमार सिंह; डॉ० निशात परवीन 2411

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी माध्यम के छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन
–पशुपति नाथ सिंह; डॉ० कल्पना सिंह 2419

भारत भूटान सम्बन्ध: एक दृष्टि–रामपत 2427

जिला भोजपुर में साक्षरता दर के परिवर्तनशील स्थानिक वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण–अनिल कुमार शर्मा 2431

प्राचीन भारत में राज्य का स्वरूप एवं प्रकृति–प्रभु दयाल जयंत 2437

हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी चंद्रलाल भाट का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० मुकेश; रेखा 2448

डॉ० बाबासाहेब के शिक्षाप्रद विचार–डॉ० अनिल विट्ठल बाविस्कर 2451

शिक्षा में ईश्वर भाई पटेल समिति की भूमिका–डॉ० हरजिंदर कौर 2454

जैन परम्परा में आध्यात्मिक शिक्षा–डॉ० दुधनाथ चौधरी 2459

उच्च-माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं शैक्षिक उपलब्धि पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव
–तुलसीराम; डॉ० चंद्रकांत शर्मा 2464

हिन्दी उपन्यासों में भारतीय रूढ़-मान्यताओं की चाक में पिसती स्त्री–शिल्पी यादव 2470

कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र में शासन प्रणाली का स्वरूप–डॉ० गौरव कुमार 2474

प्राचीन काल में शैक्षणिक प्रणाली: बिहार के संदर्भ में–डॉ० राजीव कुमार 2481

डॉ० बाबासाहेब के शिक्षाप्रद विचार

डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर

सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभाग प्रमुख, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, अक्कलकुवा, महाराष्ट्र

प्रस्तावना:

डॉ. बाबासाहेब के अनुसार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी हथियार है। वे ऐसा मानते थे। डॉ। बाबासाहेब के शैक्षिक विचार सरल और शानदार हैं। उन्होंने अपने अकादमिक चिंतन की प्रखरता से श्अस्पृश्यताश के सामाजिक कलंक को ज्वाला बनाकर साथ ही, भारत में शिक्षा की चमक से स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की स्थापना करके, उन्होंने शिक्षा के माध्यम से का निर्माण किया और भारत में संविधान के रूप में समानता के लोकतंत्र की स्थापना में एक शेर का हिस्सा लिया। डॉ। के अनुसार शिक्षा को लोगों को उनके कर्तव्य और अधिकारों के प्रति जागरूक करना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा को विस्तार से बताया है।

शिक्षा की अवधारणा :-

बच्चों को स्कूल में बाराखड़ी ही नहीं पढ़ाना चाहिए बल्कि उनके मन को संस्कारी और गुणवान बनाना चाहिए। समाज के हित में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि शिक्षित बच्चे सामाजिक प्रतिबद्धता के अपने कर्तव्यों का ठीक से और कुशलता से पालन कर सकें। स्कूल ऐसे कारखाने हैं जो अच्छे नागरिक और कर्तव्यपरायण नागरिक बनाते हैं। इस प्रक्रिया में भाग लेने वालों को इस पर ध्यान देना चाहिए उन्होंने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है।

1. सच्ची शिक्षा वह है जो राष्ट्रीय हित और सामाजिक हित का सम्मान करती है।
2. शिक्षा केवल नोटबुक और कलम नहीं है, बल्कि शिक्षा बुद्धि को सत्य की ओर, भावना को मानवता की ओर, शरीर को श्रम की ओर ले जाने का मार्ग है
3. शिक्षा ज्ञान और विवेक का पक्का संगम है।

शिक्षा के उद्देश्य :-

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को श्बोधश देती है। नहीं तो शिक्षा के अभाव में वह पशु की तरह श्अज्ञानीश बना रहेगा अपना और समाज का भला-बुरा नहीं सोच पाएगा। और इस प्रकार सामाजिक उत्थान की प्रक्रिया में अपना योगदान नहीं दे पाएगा। भारत में दलित समाज का उत्थान उन्हें पहले की तरह भोजन, वस्त्र और आश्रय प्रदान करके उच्च वर्ग की सेवा करने के लिए नहीं है, बल्कि उनके कारण उनके जीवन को निर्दयता से लूट लिया गया है। उनके लिए और उनके अपने और राष्ट्र के लिए शिक्षा का क्या महत्व है? इसे समझना ही वास्तविक श्शिक्षाश है।

शिक्षा का महत्त्व :-

शिक्षा व्यक्ति को उसके अधिकारों और कर्तव्यों से अवगत कराती है। अम्बेडकर ने समाज में शिक्षा के महत्व को विस्तार से बताया ताकि समाज में अछूतों को अपनी पहचान का एहसास हो सके। उन्होंने शिक्षा की तुलना बाघ के दूध से की है। शिक्षा बाघ का दूध है। वह गोली उस आदमी की गुर्राहट के बिना नहीं होगी। डॉ। बाबासाहेब अम्बेडकर के अनुसार, यदि आप समाज का

विकास करना चाहते हैं, तो आपको शिक्षा का प्रसार करना होगा। शिक्षा की कमी के कारण किसी को पता भी नहीं चलता कि कोई उसके साथ अन्याय कर रहा है और अनजाने में वह इन सभी अन्यायों को सहन करने की मूर्खता रखता है और ऐसे समुदाय को शिक्षित समुदाय द्वारा आसानी से गुलाम माना जाता है और उनका लाभ उठाता है। इसलिए इन अज्ञानी समुदायों में दोष पैदा हो जाते हैं। ऐसे दोष हैं। यदि इन दोषों को दूर करना है, तो सबसे अच्छी दवा सचेत, प्रबुद्ध शिक्षा है। यही शिक्षा का वास्तविक मूल्य है। यह डॉ. बाबासाहेब ज्ञान न केवल उपयोगी होता है, बल्कि उसका सही समय पर उपयोग भी होना चाहिए। नहीं तो ज्ञान केवल एक आभूषण बनकर रह जाएगा। ज्ञान के बिना कर्म अन्धा और व्यर्थ है। जब लोग शिक्षा के बिना काम करते हैं, तो यह मानव शक्ति की बर्बादी मात्र है। शिक्षा समाज और मनुष्य के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा लोगों के पक्षपाती रवैये को खत्म करती है। अनपढ़ लोगों का उन लोगों द्वारा फायदा उठाया जाता है जो उन पर हावी होते हैं। शिक्षा प्रमुख लोगों द्वारा बनाई गई समस्याओं से निपट सकती है शिक्षा विचारों में सुधार करती है। लोगों में विश्वास पैदा होता है। आत्मविश्वास के समान कोई अन्य देव शक्ति नहीं है। हमें खुद पर विश्वास नहीं खोना चाहिए। आत्मविश्वास को हमारे विकास का पहला चरण माना जाता है। जैसे खाने की संतुष्टि अस्थायी होती है, वैसे ही शिक्षा से अर्जित ज्ञान जीवन भर रहता है। पेट की भूख तो मिटती है, पर मनुष्य को एक कदम आगे बढ़कर विद्या ग्रहण करके बुद्धि की इस भूख को तृप्त करना चाहिए। पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी की ओर से डॉ. बाबासाहेब ने कहा कि निम्न समाज के उत्थान की समस्या आर्थिक मानी जाती है। लेकिन यह एक बड़ी गलती है. शिक्षा के प्रसार के अलावा और किसी चीज से दलितों की प्रगति नहीं होगी। मेरी राय में यह हमारी सभी सामाजिक बुराइयों की दवा है।

शिक्षा का कार्य:

चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा का सृजन करना चाहिए। अम्बेडकर का वास्तविक योगदान था। चरित्र पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान/ज्ञान की प्राप्ति, सदाचार और विनय, आत्मीयता, प्रज्ञा और करुणा विकास में बाधक हैं। शिक्षा का वास्तविक कार्य व्यक्ति में इन सद्गुणों और मूल्यों का पालन करने की शक्ति पैदा करना और उसके अनुसार कार्य करने का दृढ़ संकल्प करना है। अत: शिक्षा के बिना मनुष्य का वास्तविक अर्थों में उद्धार संभव नहीं है। विद्या, विनय और शील उनके तीन देवता थे। ज्ञान मनुष्य को अहंकारी नहीं बनाना चाहिए बल्कि उसे विनम्र बनाना चाहिए और मनुष्य को विनय भी रखना चाहिए।

शिक्षा एक पवित्र कार्य है :-

डॉ। अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा एक पुनीत कार्य है, मानव निर्माण का यह कार्य वहीं होता है, स्थान (शैक्षणिक संस्थान) और माध्यम (शिक्षक) दोनों को अक्षुण्ण रखना चाहिए। अन्यथा शिक्षा के माध्यम से दिये जाने वाले श्संस्कारश ठीक से और उचित ढंग से नहीं दिए जा सकेंगे और शिक्षा निष्प्रभावी हो जाएगी। स्कूल और कॉलेज पवित्र स्थान हैं और उनमें काम करने वाले मानवीय तत्वों (शिक्षकों) को छात्रों के मन में असीम आस्था रखनी चाहिए। उपरोक्त तत्व हमेशा के लिए।

शिक्षा: अन्न वस्त्र और निवारा :-

शिक्षा भोजन की तरह है। जैसे मनुष्य भोजन के बिना नहीं रह सकता, वैसे ही शिक्षा भी। अत्र का सेवन करने से व्यक्ति को शक्ति प्राप्त होती है और वह काम करता रहता है, भोजन करने से वह शरीर में अवशोषित होकर उसका रक्त बन जाता है। परिणामस्वरूप मनुष्य अधिक कुशलता से कार्य कर सकता है। डॉ। अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा मानव शरीर का अंग होना चाहिए। इसलिए उसका मन और तन स्वस्थ होना चाहिए अर्थात मनुष्य मनुष्य की तरह कार्य कर सकता है। अन्यथा वह शिक्षा के अयोग्य में पाशविक है। जिस प्रकार मनुष्य को जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। साथ ही उसे आजीवन शिक्षा की जरूरत है। अत: शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। वह चाहता था कि हर कोई जान जाए कि यह जीवन के साथ समाप्त होना है।

समारोप:-

डॉ.बाबासाहेब के शैक्षिक विचार आम लोगों के साथ-साथ समाज के उत्थान के लिए थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मानव कल्याण के सिद्धांतों को प्राथमिकता देकर जीवित रहे। यह नहीं भुलाया जा सकता

[illegible] के माध्यम से इसे बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना अभी भी आवश्यक है। समतावादी समाजपरिवर्तन, सामाजिक [illegible] समाज का निर्माण उनके लक्ष्य थे और वे शिक्षा को उनके लिए एक प्रभावी उपकरण मानते थे।

[illegible]पदा :

[illegible] अम्बेडकर के शैक्षिक विचार। गुरुप्रसाद कक्कड़. शिक्षा समीक्षा दिसम्बर 90 जनवरी 91, अंक 5 पृ

[illegible] बाबासाहेब अम्बेडकर बी.एच. कल्याणकर लोकराज्य 16-30 अप्रैल 1991 पृष्ठ सं

[illegible] अम्बेडकर के शैक्षिक कार्य। शोभा नारायण मस्कूर भारतीय शिक्षा मई 1991 पृष्ठ सं. 203-206

[illegible] (2006) - डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर (आत्मकथा) मुंबई: लोकप्रिय प्रकाशन

[illegible] जी.पी. (2009) - डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर इन हिज वर्ड्स, पुणे: सुगावा प्रकाशन

[illegible] (सितंवर 2009) दीपस्तंभ बोधिसत्व: डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर (पृष्ठ संख्या 357)

20-24

Volume - 10 (Issue - 10) August, 2020 ISSN - 2230 - 9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Refereed Journal

COSMOS
IMPACT FACTOR

5.13

Editor : Dr. R.V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102
Email - info@jrdrb.com Visit - www.jrdrvb.com

36	प्रा. पी. एम. सोनवणे	महात्मा ज्योतिराव फुले व सावित्रीबाई फुले यांचे शैक्षणिक विचार व कार्य - एक अभ्यास	134-136
37	प्रा.डॉ. अनिल विठ्ठल बाविस्कर	महाराज सयाजीराव गायकवाड यांचे धार्मिक सुधारणा कार्य	137-141
38	रत्नकांत वसंत सुतार डॉ.निळकंठ तुळशिराम वडजे	शिक्षणाचा अधिकार अधिनियम २००९ महाराष्ट्रात लागू झाल्यापासून प्राथमिक शिक्षणासंबंधी केलेली उल्लेखनीय कामगिरी आणि निर्माण झालेली आव्हाने व जबाबदाऱ्या	142-145
39	सौ. उर्मिला सुभाष शेंडगे	सोलापूर जिल्हा लोकसंख्येच्या विविध वैशिष्ट्यांचा अभ्यास	146-147
40	Mr. Bitu Shivaji Molane Dr. Wangujare S. A.	A Study of The Effect of Pranayam on Girl's Physical Fitness in between 15 to 18 ages	148-149
41	प्रा. बी. बी. गायकवाड	अण्णाभाऊ साठेंचे वाङ्मयीन कर्तृत्व : एक शोध	150-152
42	Mr. Rajendra Dagadu More	Relation Between Literature, Media and Society	153-156
43	Ajit M. Hirkane	DIGITAL LIBRARIES AND FUTURE	157-158
44	प्रा.डॉ. रविंद्र दगडू वाघ प्रकाश एकनाथ वाघ	महिलांचे राजकीय सक्षमीकरण	159-161
45	प्रा.गौतम बाबुलाल थोरात	"विभावरी शिरुरकरांच्या साहित्यातून अविष्कृत झालेले स्त्री दु:खाचे विविध पदर"	162-165
46	अतुल सुभाष गोरडे	शारीरिक शिक्षण व खेळावर संशोधनामुळे होणारा परिणाम आणि संशोधनाचे खेळ व खेळाडूंना होणारे फायदे यांचा अभ्यास	166-167
47	Dr. Sagar Daulat Patil	Labour Welfare and Social Security in India	168-170
48	प्रा.डॉ. दुर्योधन राठोड	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अस्पृश्यांच्या हक्कांसाठी संघर्ष	171-173
49	डॉ. संभाजी संतोष पाटील	स्वामी विवेकानंद यांचे राष्ट्रविकासातील चिंतन - एक विश्लेषणात्मक अभ्यास	174-178
50	Prof.Suresh Namdeo Gawai	Technology and Security Standards for Internet Banking	179-187
51	श्री. नवडे किशोर खंडेराव	दर्जेदार माध्यमिक शिक्षणासाठी माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षणाचे महत्व	188-189
52	प्रा.डॉ. दिलीप झगा चौधरी	"आदिवासींच्या शैक्षणिक मागासलेपणाची कारणे व त्यावरील उपाययोजना"	190-193

महाराज सयाजीराव गायकवाड यांचे धार्मिक सुधारणा कार्य

प्रा.डॉ. अनिल विठ्ठल बाविस्कर (सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभाग)
विद्या विकास मंडळाचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय, अक्कलकुवा जि. नंदुरबार

- प्रस्तावना -

स्वातंत्र्यपूर्व हिंदुस्थानात बडोदा संस्थानावर गायकवाड घराण्याची सत्ता होती. या राजगादीला योग्य वारस नसल्याने नाशिक जिल्ह्यातील मालेगांव जवळच्या 'कवळाणे' गावातील शेतकऱ्याचा मुलास अवघ्या वयाच्या बाराव्या वर्षातच दैवयोगाने बडोदा संस्थानाचा राजा बनण्याची संधी मिळाली. कुठलीही शैक्षणिक पार्श्वभूमी नसलेल्या या मुलास राजपदाची सत्ता आणि वैभव मिळाले. या तरूण राजाने अतिश्रमाने शिक्षण घेऊन, त्या शिक्षणाचा उपयोग रयतेच्या सर्वांगिण कल्याणासाठी व्हावा, असा ध्यास मनाशी बाळगला. आपली बौद्धिक क्षमता, प्रशासनाचे उत्तम नियोजन, जनसामान्यांप्रती असलेली तळमळ व दूरदृष्टीने तो गोर-गरिबांचा पोशिंदा झाला. त्यांनी बडोदा संस्थानास देशात अग्रक्रमाचे राज्य बनवले. महाराज सयाजीराव गायकवाड हे त्या राजाचे नाव होय.

- महाराज सयाजीराव गायकवाड यांचे बडोदा संस्थानात कार्याचा प्रारंभ -

महाराज सयाजीराव गायकवाड यांनी बडोदा संस्थानाची सर्व सूत्रे आपल्या हाती घेतल्यानंतर त्यांनी आपल्या ज्ञानाद्वारे व विविध शास्त्रांच्या ज्ञान संगोपनाद्वारे भारताला पूर्ववैभवाकडे व समाजाच्या अवनत स्थितीकडे मार्गक्रमण केले. भारताला पूर्ववैभव पुन्हा प्राप्त होण्यास काय उपाय केले पाहिजेत यासंबंधीचे पाऊले टाकण्यास त्यांनी सुरू केले. इजिप्त, ग्रीस, रोम इत्यादी राष्ट्रांच्या उत्कर्षाच्या अध्ययनातून महाराजांनी आपल्या समाजाचे रोगनिदान व त्यावर उपाययोजना करण्याचे मनाशी ठरविले. सामाजिक, धार्मिक, राजकीय व आर्थिक सुधारणेवाचून समाजाची सर्वांगीण प्रगती साध्य होणार नाही, असे त्यांचे ठाम मत झाले होते. त्यांनी लोकांना सुधारणेचा धडा घालून दिला, वारंवार उपदेश केले व आपल्या राजसत्तेच्या बळावर सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक, राजकीय, आर्थिक इ. कायदे करून समाजाच्या प्रगतीला व उत्कर्षाला आवश्यक असा मार्ग दाखविण्यास प्रारंभ केला.

- धार्मिक सुधारणा कार्य -

महाराज सयाजीराव गायकवाड यांनी राज्यकारभार आपल्या हाती घेतला त्याकाळात भारतीय समाज हा आधुनिक ज्ञान-विज्ञानापासून कोसो दूर असून कर्मकांड व अंधश्रद्धामूलक समजुतींमुळे गतिशून्य झालेला होता. भारतीय समाजात जातिप्रथा, वर्ण-लिंग भेद, स्पृश्यास्पृश्यता, निम्नवर्गीयांच्या मानवी हक्कांची पायमल्ली असे अनेक धार्मिक चिंतेचे विषय होते. या सर्व रूढी-परंपरांच्या दास्यातून आपल्या प्रजेची सुटका करणे व तिला आधुनिक ज्ञान-विज्ञानाच्या विवेकनिष्ठ जाणिवांनी सुज्ञ बनविणे हे राजाचे कर्तव्य आहे, असे महाराज मानीत. समाजातील जातीय धार्मिक दुही मिटविणे, लोकांना उद्यमशील व विवेकनिष्ठ बनविणे हा त्यांच्या राजकीय कारकिर्दीचा मुख्य उद्देश होता. माणसाला ज्ञानप्राप्तीसाठी आणि जीवनाला स्फूर्ती मिळण्यासाठी धर्म हवा असतो. पण धर्मामुळे हे साध्य जर दुरापास्त होत असेल, त्यात अडसर निर्माण होत असेल तर त्या धर्माचीच पुनर्घटना करायला पाहिजे, असे त्यांचे मत होते. मायावादावर दिलेला अकारण भर, ब्राह्मणवर्गाचा स्वार्थीपणा, जातिव्यवस्थेतील ताठरपणा यामुळे धर्मातला सेवाभाव बाजूला पडून कर्मकांडाला मिळालेले महत्त्व हा खरा अडसर होता. वर्णव्यवस्थेचा विपर्यास झाल्यामुळेच देशाची अवनती झाली व त्यामुळेच धर्माचे हे पोकळ अवडंबर दूर करून, त्यातील दुर्बोध कायदेकानूंचा जाच कमी करून तो सुलभ केला पाहिजे. धर्मचर्चेसाठी लोकांना समजणारी प्राकृत भाषा वापरली पाहिजे. काही व्याख्या नव्याने केल्या पाहिजेत. ईश्वर हा लोकसत्ताक राज्यातल्या राजासारखा आहे आणि सेवेची भावना ज्यांच्याकडे आहे, तेच देवाचे खरे सरदार-शिलेदार होण्यास पात्र आहेत असे महाराजांना वाटत असे. महाराज सयाजीराव गायकवाडांना विषमतामूलक धर्मापेक्षा समतावादी मूल्यांवर आधारलेला नवा धर्म हवा, असे वाटायचे. परंतु नवा धर्म काढल्याने वा धर्मांतर केल्याने माणसाच्या मनातील आणि व्यवहारातील भेदभाव संपणार नाहीत, असे त्यांना वाटत. म्हणून एक नवा धर्म स्थापन करण्यापेक्षा धर्मातील शासननीतीच्या मार्गाने सार्वजनिक जीवनातील विषमतेचे उच्चाटन करण्याचा मार्ग त्यांनी निवडला होता.

सर्वसामान्य माणसांच्या दृष्टीने तत्त्वज्ञानात्मक धर्मापेक्षा दैनंदिन व्यवहारातील विधिकर्म [illegible] आधारलेला लोकधर्म हेच धर्माचे खरे स्वरूप असते, असे महाराजांचे मत होते. लोकधर्मात परंपरेने [illegible] अथवा भाविकांचा आचारधर्म हे प्राथमिक तत्त्व असून सिद्धांत वा तत्त्वज्ञान हे दुय्यम स्थानावर असतात. [illegible] सुधारणा या खऱ्या अर्थाने धार्मिक सुधारणाच असतात असे महाराजांचे मत होते. 'समाज सुधारणा म्हणजे [illegible] आणि परंपरा यात करावयाच्या सुधारणा' या आगरकरांच्या मताप्रमाणेच महाराजांचे विचार होते. या भूमिकेतून [illegible] त्यांनी समाजविघातक रूढी-परंपरांचे उच्चाटन करण्यासाठी एकापाठोपाठ एक राजकीय निर्णय घेतले. [illegible] निर्णयांच्या अंमलबजावणीसाठी केवळ दंडनीती पुरेशी नसून राजनीतीला पर्यायी अशी लोकनीती घडविण्यावरही [illegible] दिला. अहिंसेवर भर, जातिभेद निर्मूलनावर भर, प्रांतभेद निर्मूलनावर भर, सामान्यांच्या हक्कांना महत्त्व देणारे [illegible] आधुनिक धर्माचे स्वरूप व कार्य असले पाहिजे, ही भूमिका त्यांनी समाज प्रबोधक भाषणांद्वारे मांडली. तसेच [illegible] आणि धर्मसत्ता परस्परांशी पूरक असायला हव्यात अशी धर्मविचाराची सुधारणावादी मांडणीही त्यांनी केली. [illegible] धार्मिक सुधारणावादी धोरणास अनुसरून आपल्या राज्यात प्रबोधनाद्वारे लोकजागृती तर केलीच त्याचबरोबर [illegible] कायद्यांद्वारे धर्मसुधारणेचे कार्य केले. महाराजांनी केलेल्या विविध धार्मिक सुधारणा कार्यांचे विस्तृत विवेचन पुढील[illegible] मांडले आहे.

१) धार्मिक स्वातंत्र्याचा कायदा -

ब्रिटिश राजवटीच्या प्रारंभकाळात ख्रिस्ती धर्मप्रसारकांच्या प्रोत्साहनातून हिंदूंचे धर्मांतर करण्याचे प्रमाण [illegible] होते. हिंदू समाज दिवसेंदिवस घटत गेल्याने व विशेष करून दलित वर्गातील मंडळी मुसलमान व ख्रिस्ती होत गेल्याने याविषयी त्या काळातील अभिजन वर्गात नाराजीचा सूर होता. यातील पुष्कळसे धर्मांतर जबरीने, जुलुमाने, निरुपा[illegible] असहाय परिस्थितीने, अज्ञानाने अथवा मूळ धर्मातल्या लोकांच्या छळवादामुळे झाले होते. मुस्लिम राजवटीतही मोठ्या प्रमाणावर हिंदूंचे धर्मांतर झाले होते. राजकीय सत्तेच्या अभिलाषेने अथवा राजकीय नफ्यातोट्यानुसारही काही प्रमाणात धर्मांतर होत असे. हिंदू धर्मातील विषमतामूलक आशय, वेगवेगळ्या वर्णातील लोकांनी आपल्या पायरीप्रमाणे राहिले पाहिजे अशी धर्मसूत्रे ब्राह्मणांनी इतरांना सांगितली होती. वेद हे जर सर्व धर्माचे मूळ होते, तर त्या वेदांवर सर्व समाजाची मालकी असायला हवी होती. पण कुंपणानेच शेत खावे तसे धर्ममार्तंडांनी इतरांना बाजूला सारून वेदांवर स्वतःचा कब्जा बसवला व स्वतःची वहिवाट निर्माण केली. यावर एकच उत्तर म्हणजे बहुजनांनी धार्मिकदृष्ट्या स्वतंत्र झाले पाहिजे, धर्मसूत्रांसारख्या तथाकथित धर्मग्रंथांनी लादलेल्या गुलामगिरीतून मुक्त झाले पाहिजे. आपले माणूसपण हिरावून घेणारा धर्म हा आपला धर्म असू शकत नाही. आपल्याला जनावराच्या पातळीवर ढकलू पाहणारे ग्रंथ हे आपले धर्मग्रंथ असू शकत नाहीत. आपल्याला समृद्ध, संपन्न आणि निकोप जीवनाच्या सर्व संधी नाकारणारे लोक हे आपले धर्मप्रवक्ते असू शकत नाहीत, अशी भूमिका बहुजन समाजाची होती असे महाराजांच्या लक्षात आले होते.

महाराज सयाजीराव गायकवाडांना विषमतामूलक धर्मापेक्षा समतावादी मूल्यांवर आधारलेला नवा धर्म हवा, असे वाटायचे. परंतु नवा धर्म काढल्याने वा धर्मांतर केल्याने माणसाच्या मनातील आणि व्यवहारातील भेदभाव संपणार नाहीत. म्हणून पुन्हा एक नवा धर्म स्थापन करण्यापेक्षा धर्मातील शासननीतीच्या मार्गाने सार्वजनिक जीवनातील विषमतेचे उच्चाटन करण्याचा मार्ग त्यांनी निवडला. यासाठी इ.स. १९०२ साली महाराजांनी धार्मिक स्वातंत्र्याचा कायदा (The Religious Freedom Act) पारित केला. या कायद्यान्वये व्यक्तीचा धर्मांतर करण्याचा अधिकार मान्य करण्यात आला. धर्मांतर केल्यावर त्या व्यक्तीचे कायदेशीर हक्क, सांपत्तिक अधिकार संरक्षित राहतील, त्यास जातिबहिष्कृत करता येणार नाही, याची कायद्याने हमी देण्यात आली. काही राज्यात धर्मांतर करणे हा दंडनीय गुन्हा मानला जात असे. बडोदे सरकारने मात्र धर्मांतराच्या व्यक्तिस्वातंत्र्यास अधिमान्यता दिली. अशाप्रकारे महाराजांनी धार्मिक स्वातंत्र्याचा कायदा अस्तित्वात आणून सर्वसामान्यांना धर्मस्वातंत्र्याचा मार्ग मोकळा करून दिला. यावरून महाराज सयाजीराव गायकवाड यांचे धार्मिक सुधारणेबाबतचे विचार किती क्रांतदर्शी आणि वास्तववादी होते हे लक्षात येते.[१]

२) हिंदू धर्मातील वैवाहिक सुधारणा कायदे -

पूर्वीच्या काळी भारतात बालविवाहाची प्रथा सर्वच जाती-धर्मातील लोकांत मोठ्या प्रमाणावर होती. त्याकाळी अल्पवयात मुला-मुलींची लग्ने लावणे सर्वसाधारण बाब होती. त्यावेळी कडवा कुणबी नावाची एक जात होती. या जातीत दर बारा वर्षांनंतर एकच वर्ष लग्नाचा मोसम म्हणून मानले जात असे. त्यामुळे त्या एकाच वर्षी सर्व लग्ने उरकून घेण्याचा

प्रथात होता. बऱ्याच वेळी नुकत्याच जन्म झालेल्या मुला-मुलींची लग्नेही उरकून घेण्यात येत! कारण तसे न केल्यास ही लग्नाची पर्वणी पुन्हा बारा वर्षांनंतर येणार व त्यावेळी या मुला-मुलींचे वय बारापासून तर वीस वर्षांपर्यंत असणार अशी भीती या जातीतील लोकांना असे. समाजातील अज्ञान, अंधश्रद्धा, लोकरूढी व जुनाट रूढी-परंपरांमुळे अशा अनिष्ट बाबींना ऊत आला होता. आपल्या प्रजेची शक्ति व तिचे आयुर्मान वाढविण्याच्या हेतूने इ.स. १९०४ साली महाराजांनी आपल्या राज्यात 'बालविवाह प्रतिबंधक कायदा' तयार केला. या कायद्यान्वये मुला-मुलींच्या लग्नाच्या वयाची किमान मर्यादा अनुक्रमे १६ व १२ अशी निश्चित करण्यात आली होती. याहून कमी वयाच्या मुलांमुलीची लग्ने करणे काही कौटुंबिक कारणांमुळे आवश्यक असल्यास तसे करण्यासाठी कोर्टाची परवानगी घेण्याची मुभा या कायद्यात ठेवलेली होती व अशी परवानगी घेतल्याशिवाय अल्पवयीन मुलांची लग्ने लावणाऱ्या पालकांवर कोर्टात खटले भरून त्यांना दंड करण्याची तजबीज केलेली होती. तथापि सशास्त्र रीतीने झालेले कोणतेही लग्न या कायद्याअन्वये निरर्थक अथवा बेकायदेशीर ठरविले गेले नव्हते. परंतु इ.स. १९२९ साली या कायद्यांत जी सुधारणा करण्यात आली, त्या अन्वये आठ वर्षे वयाच्या अगोदर झालेले मुला-मुलींचे लग्न धर्मदृष्ट्या सशास्त्र रीतीने झालेले असले, तरी ते निरर्थक व बेकायदेशीर ठरविण्यात आले. यानंतर इ.स. १९३२ साली यात सुधार करून मुला-मुलींच्या लग्नाची किमान मर्यादा १६ व १२ च्या ऐवजी १८ व १४ अशी करण्यात आली.[२]

इ.स. १९०६ साली हिंदु लग्नासंबंधीचा कायदा तयार करण्यात आला. यात वेळोवेळी सुधारणा करून इ.स. १९२८ साली लग्नविषयक सर्व वैदिक मंत्रांचे मराठी, गुजराथी व हिंदी या भाषांमध्ये भाषांतर करून ते सरकारमार्फत प्रसिद्ध करण्यात यावे व ते भाषांतर वधू-वरांच्या जन्मभाषेत त्यांना लग्न करणाऱ्या पुरोहिताने वाचून, समजावून सांगावे. तसे करण्यास तो चुकल्यास न्यायकोर्टात ५० रु. दंड होण्यास तो पात्र व्हावा, असे या कायद्याद्वारे ठरविण्यात आले. प्रचलित हिंदुधर्मशास्त्राप्रमाणे, 'पंचमात् सप्तमाद्ध्व मातृतः पितृतः क्रमात् ।' या वचनानुरोधाने मातेकडून पाचव्या पिढीपर्यंत व पित्याकडून सातव्या पिढीपर्यंत वधूवरांचा पूर्वज जर एकच येत असेल, तर त्या वधू-वरांचे लग्न होऊं शकत नाही असा प्रतिबंध ठेवलेला होता. या निर्बंधामुळे अगोदरच लग्न जुळविण्याच्या कामात येणाऱ्या व्यावहारिक अडचणीत या धार्मिक अडचणींची भर पडते, असे जाणून लग्नाच्या कायद्यात याहून मोठा फेरफार इ.स. १९३१ साली करण्यात आला. या नवीन कायद्याद्वारे हा निर्बंध तीन पिढ्यांपर्यंतच मर्यादित केला आहे.[३]

हिंदु धर्मात विवाह हा एक धार्मिक संस्कार असून हिंदु लग्न हे अच्छेद्य आहे अशी धर्मशास्त्राची व लोकमताची मान्यता होती. परंतु यामुळे अनेक स्त्रियांना आपला पती आवडत नसला, जुलूमी असला, दुर्धर आजाराने ग्रस्त असला किंवा अन्य कारणानेही त्यांना या विवाह बंधनातून मुक्त होता येत नसे. त्यामुळे त्यांना अनेक हाल-अपेष्टांना सामोरे जावे लागत होते. यावर उपाय म्हणून इ.स. १९३१ साली बडोदे संस्थानात 'हिंदु लग्नविच्छेद कायदा' पारीत करण्यात आला. त्याअन्वये काही विशिष्ट प्रसंगी शास्त्रीय रीतीने विवाहित असलेल्या वधू-वरांना काडी मोडून देण्याची सवड दिली गेली. अशीच परिस्थिती हिंदु धर्मात विधवा स्त्रियांची होती. विवाहानंतर अल्पावधितच पतिचे एखाद्या आजाराने, अपघाताने अथवा इतर कारणाने मृत्यू झाल्यास. त्या स्त्रीस आजन्म विधवा राहावे लागत होते. त्यामुळे त्यांना आजन्म परावलंबी व खितपत जीवन कंठावे लागत होते. हिंदु विधवा विवाहाविषयी महाराष्ट्रात व इतरत्रही अनेक मोठमोठाले वाद करण्यात आले.[४]

३) धार्मिक विधी व आचार-विचार विषयक सुधारणा -

महाराज सयाजीराव गायकवाडांनी विविध धार्मिक बाबतीत सावकाश पण दृढनिश्चयाने सुधारणा घडवून आणल्या. सरकारवाड्यात सर्व धार्मिकविधी व आचारविचार त्यांनी चालू ठेवले पण जाती-जातीमध्ये भेदभाव दुणावणारी व उच्चनीचपणा वाढविणारी 'पुराणोक्त' धर्मविधी चालविण्याची चाल महाराजांनी बंद केली. त्यांनी सर्व धार्मिक मंत्र-तंत्राची मराठीमध्ये भाषांतरे करविली. वाड्यात वेदोक्त रीतीने व सर्व विधींचा अर्थ सांगून धर्मविधी केले पाहिजेत, असा निर्बंध केला व जे ब्राह्मण या सुधारणेला कबूल नव्हते त्यांची वेतने काढून दुसऱ्यास दिली. तसेच धर्मगुरू म्हणविणाऱ्या उपाध्यायांचे अज्ञान घालविण्याकरिता ते निव्वळ धर्मशास्त्राचा अर्थ न जाणणारे भारवाहक न राहता धर्मतत्त्व शिकवणारे समाजाचे खरेखुरे धर्मगुरू व्हावे म्हणून उपाध्यायपरीक्षा अस्तित्वात आणली व उपाध्यायगिरीचा परवाना देण्याचा कायदा केला. मात्र परवानावाले उपाध्यायच सर्व समाजाने धर्मसंबंधी कार्यात योजिले पाहिजेत, अशी सक्ती केली नाही. तरी पण प्रत्येक उपाध्यायाने लग्नाचे वेळी विवाहमंत्रांचा व विवाह विधीचा अर्थ मातृभाषेत वधुवरास समजून सांगितलाच पाहिजे, असे कायद्यात कलम घातले. उपाध्यायासंबंधीच्या कायद्याने महाराजांनी जातीनिर्बंध पुष्कळच सैल करण्याचा उपक्रम केला यात शंका नाही. कारण उपाध्यायांच्या परीक्षेत बसण्याचा हक्क सर्व जातीतील लोकांना दिला व त्यायोगे जातींमधील उच्च-

नीचत्वाच्या कल्पना पुष्कळ अंशाने कमजोर झाल्या. पुरोहित प्रशिक्षित असावेत या हेतूने इ.स. १९१५ साली 'पुरोहित कायदा' संमत करण्यात आला. त्या कायद्यानुसार प्रशिक्षित पुरोहित उपलब्ध असल्यास पिढीजात व्यवस्थेनुसार पौरोहित्य व्यवसाय मिळालेल्या परंतु अप्रशिक्षित असलेल्या पुरोहितांना त्या व्यवसायापासून वंचित करण्याचे अधिकार दिवाणी कोर्टास देण्यात आले. दुसऱ्या कायद्यानुसार विवाह विधीतील संस्कृत भाषेतील सर्व धार्मिक संस्कारांचा अर्थ वर आणि वधूच्या भाषेत समजाऊन सांगणे पुरोहितांना बंधनकारक करण्यात आले. जर तसे तो करू शकला नाही तर तक्रारकर्त्याच्या फिर्यादीनुसार तो दंडास पात्र ठरविण्यात आला. संस्कृत भाषेतील सर्व विवाहविधीचे अधिकृत भाषांतर महाराजांनी सनदी राजपत्रात (स्टेट गॅझेट) प्रकाशित करवले होते.[५]

४) जैन धर्मातील अज्ञान बालकांची दीक्षा पद्धतीत सुधारणा -

हिंदु धर्मातील विविध अनिष्ट चाली-रिती व परंपरांबरोबरच इतर धर्मातही अनेक त्रासदायक समजुती रूढ होत्या. त्या अनुषंगाने जैन लोकांत एका विशेष समजुतीचा पगडा लोकांवर अधिक होता. ती समजूत अशी की, संन्यासदीक्षा घेऊन यति झाल्याने मनुष्यास अधिक पुण्यप्राप्ति होते. या समजुतीनुसार वयाने सज्ञान असलेले स्त्री-पुरूष स्वखुशीने संन्यासदीक्षा घेण्यावर कोणाचाही आक्षेप नव्हता. परंतु या समजुतीचा दुरूपयोग करून अल्पवयीन मुला-मुलींना जबरीने अथवा फुस लावून संन्यासदीक्षा देण्यात येत व त्यांना पुढील आयुष्यात व्यवहारदृष्ट्या मृतवत् करून टाकले जात होते. याबाबत महाराजांनी लोकप्रतिनिधींची मते जाणून घेतली. प्रथमतः अल्पवयीन बालकांना संन्यासदीक्षा देण्याबद्दल जैनधर्मशास्त्रांत आधार काय आहेत, यांचा निर्णय करण्यासाठी एक विशेष कमिटीची नेमणूक केली. जेव्हा या पद्धतीला शास्त्रात समर्पक आधार नाही अशी खात्री झाली तेव्हा याबद्दलचा कायदा करण्याचे ठरविले. या कायद्यान्वये अज्ञान बालकाला दिलेली संन्यासदीक्षा निरर्थक ठरविण्यात येऊन, ती दिली गेल्याने मिळकतीवरच्या त्याच्या हक्काला कोणत्याही तऱ्हेने बाधा येत नाही, असे ठरविण्यात आले. त्याखेरीज अज्ञान मुला-मुलींना जबरीने अथवा फसवून दीक्षा देणे हा फौजदारी गुन्हा समजला जाऊन, तो गुन्हा करणारा मनुष्य कैदेच्या शिक्षेस अथवा दंडास पात्र होईल, असे ठरविण्यात आले. अशा रीतीने अज्ञानांवर होत असलेल्या जुलुमाचा प्रतिकार करण्याचे साधन या कायद्याने लोकांना प्राप्त करुन देण्यांत आले. अशा रीतीने जुलमी रूढी मोडून काढण्याचे कायदेशीर प्रयत्न महाराजांनी चालू ठेवले होते. या सुधारणेत जैन लोकांच्या रागा-लोभाची महाराजांनी मुळीच पर्वा केली नाही. धार्मिक सुधारणा करतांना नेत्यांना कधी-कधी वाईटपणाही घ्यावा लागतो. त्याशिवाय सुधारणेचे पाऊल पुढे पडणार नाही, असे महाराजांचे ठाम मत होते.[६]

५) मुस्लिम धर्मातील वक्फ मिळकतीसंबंधी कायदा -

हिंदु व जैन धर्मातील समाजाच्या उन्नतीसाठी महाराजांनी विविध धार्मिक कायदे करीत असतांना त्यांनी मुस्लिम प्रजेकडेही दुर्लक्ष केले नाही. मुस्लिम समाजात धर्मदायासाठी दिलेल्या देणगीला 'वक्फ' असे म्हणतात व अशा देणगीची व्यवस्था करण्यासाठी नेमलेल्या विश्वस्त व्यवस्थापकाला (Trustee) 'मुतवल्ली' असे म्हणतात. या मुतवल्लींनी अशा धर्मादाय मिळकतीची व्यवस्था मूळ उद्देशाला धरून केली पाहिजे व जमाखर्चाचे हिशेब बरोबर ठेवले पाहिजेत, अशी त्यांच्यावर जबाबदारी असते. परंतु बहुतांश मुतवल्ली लोक ती धर्मदाय मिळकत आपल्या मालकीचीच आहे असे समजून तिचा त्याप्रमाणे उपयोग करीत असत. बऱ्याचदा सावकारांची थकबाकी देणे टाळण्यासाठी व त्याला फसविण्याच्या हेतूने आपली मिळकत वक्फ अथवा धर्मदाय म्हणून देण्याची युक्तीही केली जात होती. शिवाय अशा वक्फ मिळकतीची कोठेही नोंद केलेली नसल्यामुळे, कोणती मिळकत खरी धर्मदाय दिलेली मिळकत आहे हे जाणून घेणेही फार कठीण होते. ही सर्व दुर्व्यवस्था नाहीशी करण्यासाठी महाराज सयाजीराव गायकवाडांनी बडोदे संस्थानात इ.स. १९२७ साली 'वक्फ कायदा' करण्यात आला. या कायद्यान्वये धर्मदाय मिळकतीच्या मुतवल्लींकडून केल्या जाणाऱ्या गैरव्यवस्थेला आळा घालून ट्रस्टी या नात्याने त्याने सदर मिळकतीची व्यवस्था मूळ उद्देशाला धरून करण्याबद्दलची जबाबदारी त्यांच्यावर कायद्याने टाकण्यात आली आहे. त्याचबरोबर हिंदु सार्वजनिक धर्मदाय मिळकती संबंधाने अशाच प्रकारचा कायदा करून मठाधिपती, महंत, पुजारी, वगैरे लोकांवरही त्यान्वये नियंत्रण ठेवण्यात आले. या कायद्याने मुस्लिम धर्मातील वक्फ मिळकतीसंबंधाने व्यवस्था करण्यात येऊन दोन्ही धर्मात सारखेपणा आणण्यात आला. अशाप्रकारे महाराजांनी आपल्या राज्यात कुठलाही धार्मिक भेदाभेद न ठेवता सर्व धर्मियांच्या उत्थानासाठी धार्मिक सुधारणेचे कार्य केले, असे स्पष्ट होते.[७] असे संशोधकाचे ठाम मत आहे.

• सारांश -

महाराज सयाजीराव गायकवाड बुद्धिप्रामाण्यवादी होते. धर्मातील कोणत्याही ताठर संप्रदायास ते मानत नव्हते. त्यांच्या मते मानवता हाच खरा धर्म आहे आणि समाजसेवा, समानता, स्वातंत्र्य, बंधुत्व व मानववंशातील पूर्ण ऐक्य आणि सुसंवाद ही त्याची तत्त्वे आहेत. धर्मातील दांभिक भाषेविषयी त्यांना चीड होती. विविध धार्मिक रूढींच्या प्रभावाखाली एकाच प्रकारच्या वातावरणात वाढलेला हा भारतीय संस्थानाचा राजा लोकांच्या संवेदनांविषयी सहानुभूती बाळगण्यास सक्षम होता. तसेच धार्मिक सुधारणेच्या प्रेरणा आणि त्यातून होणाऱ्या तीव्र विरोधाची पूर्ण कल्पना असली तरी त्यांनी त्या दिशेने सावधपणे पावले टाकली. सुरूवातीला गोडीगुलाबीने मन वळवण्याचे धोरण ठेवत हळूहळू त्यात उघडपणे चर्चा घडवून त्यावर प्रत्यक्ष कायदे करत त्यांनी आपल्या ध्येयाप्रती वाटचाल केली. प्रचार आणि कायदा यांच्या माध्यमातून सुधार व्हावला हवा, असा महाराजांचा विश्वास होता. कोणतीही गोष्ट एकदम आमूलाग्र बदलेल असे त्यांना वाटत नव्हते. परकीय सत्तेच्या अधिपत्याखाली आल्यापासून भारताला जे दुष्परिणाम भोगावे लागत होते त्यावर जनप्रबोधन करून, त्यात सुधारणा करून त्यांचा अंमल करणे हाच रामबाण उपाय आहे, हे त्यांनी जाणले होते. केवळ हिंदूच नव्हे तर संपूर्ण भारतीय समाजात आधुनिक बदल घडावे, ऐक्य घडावे, समाज धार्मिकदृष्ट्या प्रगल्भ व्हावा तसेच लुटारू व शोषणकर्ते असणाऱ्या पाश्चिमात्य देशांच्या विरोधात तो उभा ठाकेल इतका सक्षम असा भारत देश घडावा व यासाठी सर्वतोपरी काहीही करावे अशी त्यांची उत्कट इच्छा होती. याच विचारांच्या बळावर महाराजांनी विविध धार्मिक सुधारणा करून प्रजेचे कल्याण केल्याचे स्पष्ट होते. अशाप्रकारे महाराज सयाजीराव गायकवाडांनी विविध अंगांनी धार्मिक सुधारणा करून परिवर्तन घडवून आणले.

• संदर्भ -

१) वरखेडे रमेश - महाराजा सयाजीराव गायकवाड यांचा भाषणसंग्रह, भाग-१, खंड-१, महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र साधने प्रकाशन समिती, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती २०१७, संपादकीय प्रस्तावना पृ.क्र. ८२-८५

२) आपटे दाजी नागेश - श्री. महाराज सयाजीराव गायकवाड (तिसरे) यांचे चरित्र (इ.स. १९११-१९३५), खंड ३ रा, प्रकाशक आपटे दाजी नागेश, बडोदा, पृ.क्र.९५०-९५१

३) तत्रैव - पृ.क्र.९५१-९५३

४) तत्रैव - पृ.क्र. ९५३-९५५

५) भांड बाबा - महाराजा सयाजीराव गौरवगाथा युगपुरूषाची, खंड-१२, महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र साधने प्रकाशन समिती, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती २०१७, पृ.क्र. १५७-१५८

६) पवार निंबाजीराव - जेव्हा गुराखी राजा होतो...श्रीमंत महाराज सयाजीराव गायकवाड, सयाजी प्रकाशन, नाशिक, द्वितीय आवृत्ती १९८८, पृ. ९५

७) आपटे दाजी नागेश - श्री. महाराज सयाजीराव गायकवाड (तिसरे) यांचे चरित्र (इ.स. १९११-१९३५), खंड ३ रा, प्रकाशक आपटे दाजी नागेश, बडोदा, पृ.क्र. ९६२-९६३

*****

RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN- 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal
UGC-CARE LISTED

Special Issue - II
Environmental Changes, Biodiversity And Sustainable Resource Management

September 2020

Executive Editor :Prin. Dr. B. M. Bhanje

Principal, Santosh Bhimrao Patil Arts commerce & Science College, Mandrup &
Former BCUD Director, Punyashlok Ahilyadevi Holkar Solapur University, Solapur

Co-Editor : Dr. D. K. Dede

Chief Editor : Dr. Nanasaheb Survawanshi

Address
'Pranav', Rukmenagar,
Thodga Road, Ahmadpur, Dist- Latur 413515 (MS)

51	शाश्वत विकासासाठी पर्यावरण शिक्षणाची गरज : एक अभ्यास	डॉ. सज्जन उध्दव पवार	242-245
52	शास्वत विकासासाठी गांधीवादी मॉडेल	डॉ.विश्वनाथ महादेव आवड	246-248
53	पर्यावरण संवादाचे महत्व	प्रा. डॉ. सुहास दुर्गादासराव पाठक	249-252
54	प्राचीन भारतीय इतिहासातील नैसर्गिक पर्यावरण संकल्पना	प्रा. प्रफुल. एम. राजुरवाडे	253-257
55	पर्यावरण शिक्षण वर्तमानकालीन उपयुक्तता व महत्व	प्रा. कार्तिक पाटील	258-261
56	खरगोन शहर के मलिन बस्ती का स्वास्थ्य पर प्रभाव	डॉ.मनिषा जगदीशलाल वर्मा	262-266
57	पर्यावरण नीती आणि शाश्वत विकास	डॉ. बाळासाहेब मुळीक	267-271
58	इतिहास आणि पर्यावरण एक घनिष्ट संबंध	प्रा.डॉ.आनंदा एम.काळबांडे	272-274
59	बडोदे संस्थानातील महाराजा सयाजीराव गायकवाड यांची जलव्यवस्थापन व पाणी पुरवठा योजना एक दृष्टीक्षेप	प्रा.डॉ.अनिल विठ्ठल बाविस्कर	275-278
60	बिहार राज्य चम्पारण जिलों का जल संसाधन प्रबंधन एवं रणनीति: एक भौगोलिक विश्लेषण	रबिन्द्र पासवान	279-282
61	विद्यार्थ्यांच्या नेतृत्व गुणांच्या विकासात राष्ट्रीय सेवा योजनेचे योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मंगेश गोविंदराव आचार्य व डॉ. नितीन तुळशीराम कत्रोजवार	283-287
62	ग्रामिणीकरण आणि गावामधील अंतर यांच्या परस्पर संबंधाचा चा भौगोलिक अभ्यास : यवतमाळ जिल्हा	प्रा.डॉ.कल्पना ए. देशमुख	288-291
63	अमरावती जिल्ह्यातील बदलत्या स्त्री- पुरुष साक्षरतेतील असमानतेचे भौगोलिक विश्लेषण	डॉ. अमोल रामेश्वरराव भुयार व डॉ. संदीप सुभाष भावसार	292-297
64	क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले यांचे सामाजिक आणि सांस्कृतिक विचार व कार्य	प्रा.डॉ. रविंद्रनाथ महादेवराव केवट	298-300
65	जलप्रदूषण कारणे आणि उपाय	प्रा. डॉ. विजय रेवजे	301-302
66	लोकसाहित्याच्या लोकगीतातील पर्यावरणाचा अन्वयार्थ	प्रा . जवाहर मोरे	303-305
67	नदी प्रदूषण: एक चिकित्सा	डॉ. सजय तुकाराम वाघमारे	306-309
68	पर्यावरण प्रदूषण - कारणमीमांसा व उपाययोजना	डॉ. रामेश्वर एम. मोरे	310-313
69	बिहार राज्य के नालंदा जिला का मृदा संसाधन एवं जनसंख्या प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन	पुरन चन्द	314-317
70	पर्यावरणीय शाश्वत विकास आणि शिक्षण	प्रा. डॉ. आनंद ज्ञानेश्वर शिंदे	318-321
71	धुळे जिल्ह्यातील बदलत्या पीक विविधतेचा भौगोलिक अभ्यास	डॉ. उत्तम वेडू निळे, प्रा. रुपेश रमेश देवरे व डॉ. संदीप सुभाष भावसार	322-325
72	पर्यावरणपूरक सेंद्रिय शेती	डॉ. राजाराम केरबा पाटील	326-331
73	वातावरणातील बदल व प्रदूषणामुळे निर्माण होणाऱ्या सामाजिक समस्या	डॉ. भुरके नागोराव संभाजी	332-336
74	परभणी जिल्ह्यातील नागरीकरण वाढीच्या दराचा अभ्यास	डॉ. भगवान प्रभाकरराव शेंडगे	337-339

बडोदे संस्थानातील महाराजा सयाजीराव गायकवाड यांची जलव्यवस्थापन व पाणी पुरवठा योजना एक दृष्टीक्षेप

प्रा.डॉ.अनिल विठ्ठल बाविस्कर

सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभाग, वि.वि.मं.कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय, अक्कलकुवा, जि.नंदुरबार

गोषवारा (abstract)

सदर शोध निबंधामध्ये संशोधकाने पर्यावरण आणि इतिहास यामधील महाराज सयाजीराव गायकवाड यांच्या बडोदा संस्थानामध्ये जल व्यवस्थापनाविषयी केलेल्या विविध पाणी पुरवठ्याच्या योजनांचा आढावा थोडक्यात मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे. या शोध निबंधात जल व्यवस्थापन व पाणी पुरवठ्याचा निर्णय घेण्यासाठी कसा प्रयत्न केला गेला आणि ती योजना प्रत्यक्षात कशी अंमलात आणली? याचा ऊहापोह करण्यात आला असून पाणी पुरवठ्याच्या विविध योजना सुरु करुन बडोदे संस्थान सुजलाम सुफलाम कसे करण्यात आले, याविषयीचे विवेचन करण्यात आले आहे. आणि निष्कर्षमध्ये जल व्यवस्थापनाविषयी महाराज सयाजीराव गायकवाड यांनी इतर समाज सुधारकांपेक्षावेगळे उत्तुंग कार्य केलेले दृष्टीक्षेपात येईल.

ब्रिजशब्द: जलसिंचन पाणी पुरवठा योजना संस्थान, शेती, उद्योग व्यवसाय.

प्रस्तावना :

भारतात इंग्रजांच्या राजवटीत शेकडो राज्ये व संस्थाने अस्तित्वात होती. या राज्यांमध्ये व संस्थानांमध्ये विविध राजे आपआपला राज्य कारभार चालवित होते. परंतु त्यापैकी थोडेच असे राज्यकर्ते होते की, ज्यांनी आपले संपूर्ण प्रजेच्या हितासाठी वाहून नेले. महाराज सयाजीराव गाकवाड यांनी बडोदे संस्थानास दिलेले योगदान खरोखरच अपूर्व व दैदिप्यमान असे आहे. महाराजांची दृष्टी चौफेर व दूरवर पाहणारी होती. त्यांनी आपल्या बडोदे संस्थानात जल व्यवस्थापन करुन पाणी पुरवठ्याची योजना यशस्वीपणे राबवून संस्थान सुजलाम सुफलाम केले. मानवाच्या मुलभूत गरजांपैकी सर्वात महत्त्वाची गरज म्हणजे पाणी होय. प्रजेला पिण्यासाठी शुद्ध पाणी आवश्यक आहे. तसेच जलव्यवस्थापन केल्यास सिंचनाच्या माध्यमातून शेती व उद्योग व्यवसायासाठी ते उपयुक्त ठरेल. म्हणून त्यांनी पाणी पुरवठ्याची योजना प्रत्यक्षात बडोदे संस्थानात राबविली. व संस्थानात समृद्धी आणली.

१) जल व्यवस्थापन व पाणी पुरवठ्यासाठी घेतलेला निर्णय:

मानवाच्या मुलभूत गरजांपैकी सर्वात महत्त्वाची गरज म्हणजे पाणी होय. मानवास पिण्यासाठी शुद्ध पाण्याची आवश्यकता असते. तसेच दैनंदिन वापरासाठी, उद्योग-व्यवसायांसाठी व शेतीसाठी अशा विविध गरजांसाठी पाण्याची नितांत गरज असते. कुठल्याही प्रांतात जर पाण्याचे प्रमाण मुबलक असेल तरच तो प्रांत सर्वांगिण प्रगती साधू शकतो. याच अनुषंगाने इ.स.१८६६-६७ साली खंडेराव महाराजांनी बडोदा संस्थानात नर्मदा नदीतून पाणी आणण्याच्या योजनेचा विचार केला होता; परंतु मुंबईचे इंजिनियर कर्नल यांनी ही योजना खर्चिक आणि नुकसानकारक होईल असा अभिप्राय दिल्यामुळे ती प्रत्यक्षात येऊ शकली नाही. तत्पश्चात दहा वर्षानंतर दिवाण सर टी.माधवराव यांनी पुन्हा हा प्रश्न हाती घेतला होता. यासाठी एका युरोपियन इंजिनियरला खास नियुक्त करण्यात आले होते आणि महानदी, ओरसंग, सावली गावाचे तलाव इत्यादींचा अनुक्रमे विचार करण्यात आला होता. शेवटी रेल्वे स्टेशनाजवळ ५० कुवे खोदून पंपांच्या साहाय्याने शहराला पाणी पुरवठा करण्याची योजना त्यांनी सादर केली. परंतू कुव्यातील झरे व्यापक आवश्यकतेला पुरे पडतील की नाही या संशयाने सर टी.माधवराव यांनी या खर्चिक योजनेतून पाऊल मागे घेतले. अशा वेगवेगळ्या अडचणींमुळे बडोद्यात पाणी पुरवठा योजना रखडत गेली. पुढे महाराज सयाजीराव गायकवाड यांनी राज्यारोहणानंतर अल्पकाळातच हा प्रश्न उचलून धरला. बडोद्यातील प्रजेचे पिण्याच्या पाण्याचे हाल बघून शहरासाठी पाणी कसे आणता येईल, यासाठी महाराजांनी नाईल नदीवरच्या बंधाऱ्याचा अभ्यास करण्यासाठी इंजिनिअरला इजिप्तला पाठवले. पुढे त्यांनी इ.स.१८८४ साली बडोदे तालुक्याची पाहणी करून कच्छमध्ये कार्यरत हिंदी इंजिनियर श्री.जगन्नाथ सदाशिव यांना या योजनेसाठी नियुक्त केले. गुरुत्वाकर्षणाच्या नियमाप्रमाणे उंच स्थळाहून बडोदे शहराला पाणी पुरवठा करणे शक्य नाही असा कित्येक निष्णांताचा अभिप्राय असूनही त्यांनी बडोद्याहून १२ मैलावर असलेल्या सूर्यानदी आणि

वाघली नाल्याला सेतू बांधून सरोवराच्या स्वरुपात आणता येईल आणि gravitation scheme प्रमाणे पाणी पुरवठा करता येईल असा अभिप्राय दिला. जानेवारी १८८५ साली बडोदे शहराच्या एक लक्ष नागरिकांसाठी स्वच्छ आणि पुरेसे पाणी मिळावे म्हणून राजधानीपासून बारा मैलावर महाराजांनी वॉटर वर्क्स योजनेची सुरुवात करून तिला प्रजाहितासाठी उपयुक्त अशी एक मोठी खर्चिक आणि आवश्यक योजना म्हणून जाहीर केली. दि.२९ मार्च १८९२ रोजी वॉटर वर्क्स तयार झाले व त्यास सयाजी सरोवर असे नामकरण करण्यात आले. श्री सयाजी सरोवराच्या पूर्व दिशेचा बांध ३॥मैल लांब आहे व २३ फूट जास्तीत जास्त खोली असून ५॥मैल चौरस विस्तारात पाणी पसरलेले आहे. तेथून पाच मैलावर आलेल्या नीमेठातून पाणी येऊन दोन तलावात स्थिरावते व स्वच्छ होऊन पुढे जाते. असे भव्य व सुंदर याचे स्वरूप आहे.

२) महाराज सयाजीरावांनी अंमलात आणलेली पाणी पुरवठा योजना :

महाराज सयाजीराव गायकवाडांनी साकारलेली पाणी पुरवठ्याची ही योजना अत्यंत दूरदर्शी ठरली. इ.स.१९०० मध्ये अनावृष्टीच्या काळातही यामुळे पाणी टंचाई जाणवली नाही. पुढे इ.स.१९२६ मध्ये प्रतापपुरा येथे सहाय्यक सरोवर आणि पोषक कालवा बांधण्यात आला. ज्यामुळे २५ मैलावरच्या प्रदेशातून श्रीसयाजी सरोवरात पाणी येऊ लागले. या लहान प्रतापपुरा सरोवराला श्री.राज पौत्र प्रतापसिंहाचे नाव देऊन 'प्रतापसिंह सरोवर' असे नामकरण करण्यात आले. बडोदे वॉटर वर्क्सच्या या सर्व योजनांचा रुपये ६० लक्ष खर्च झाला होता. परंतु या योजना प्रजेच्या उज्ज्वल भविष्यासाठी तितक्याच महत्त्वपूर्ण ठरल्या. पुढे महाराजांनी राज्यातील मोठ्या वस्तीची शहरे व गावांसाठी पाणी पुरवठ्याच्या योजना तयार करण्यास सुरूवात केली. इ.स.१९१२ मध्ये भादरण व इ.स.१९१५ मध्ये पाटण येथे वॉटर वर्क्सचे अनावरण करण्यात आले. यास पूर्णत्वास आणण्यासाठी स्थानिक नगरपालिका व संस्थांमार्फत खर्च करण्यात आला. तर काही गावांमध्ये संपूर्ण खर्चाची तरतूद महाराजांनी राज्याच्या उत्पन्नातून केली. राज्यातील लहान-मोठ्या नगरपालिकांना स्वत:च्या हद्दीत पाणी पुरवठ्याच्या योजनेचा लाभ घेता यावा म्हणून महाराजांनी काही उदार नियम बनविले होते. या नियमांप्रमाणे योजना अंमलात आणण्याच्या एकंदर खर्चाचा १/३ ते ३/४ भाग प्रत्येक स्थळाच्या आवश्यकता आणि स्थितीप्रमाणे राज्य सरकार मदत म्हणून देत. उरलेल्या भागासाठी कर्ज देत. हे कर्ज ३० ते ५० वर्षात फेडावयाचे असे. योजनांचा विकास व अंमल जाहीर बांधकाम विभाग विनामूल्य करून देत. खेड्यांसाठी योजनेच्या एकंदर खर्चाच्या ७५ टक्के रक्कम राज्याकडून दिली जात असे. प्रजेला शुद्ध आणि भरपूर पाणी पुरवठा व्हावा म्हणून महाराजांनी ७००० किंवा त्याहून अधिक वस्तीच्या राज्यातील शहरात पाणी पुरवठ्याच्या योजना अंमलात आणण्यासाठी अहोरात्र प्रयत्न केलेत. या योजने संबंधी महाराज आपले मत व्यक्त करताना म्हणतात, ''माझी हार्दिक तीव्र इच्छा आहे की, या तलावामुळे बडोदे शहराच्या माझ्या प्रजेला आरोग्यदायक स्वच्छ पाणी उपलब्ध होईल, इतकेच नव्हे तर पूर संकट किंवा अनावृष्टीसारख्या आपत्तीच्या प्रसंगी त्यांना पुरेपूर मदत आणि लाभ मिळेल. पुराच्या प्रसंगी त्याच्या भयातून बचाव होईल आणि कमी पावसाच्या प्रसंगी भरपूर पाणी मिळू शकेल. मला खात्री आहे की, याप्रमाणे दुप्पट फायदा होईल. हे जाणून प्रजा सुरक्षिततेसाठी आता निर्भय होईल. या हेतूने मी हे असे साहस केले आहे आणि मी मन:पूर्वक आशा करतो की, ते हल्लीच्या प्रजेलाच नव्हे तर भविष्यातील प्रजेला पण आशीर्वादात्मक होईल.'' यावरून महाराजांचा दूरदर्शिपणा स्पष्ट होतो.

३) पाणी पुरवठ्याच्या विविध योजना :

दि.२९ मार्च १८९२ रोजी आजवा सरोवरातील पाणी बडोदे शहरात नळाने प्रथमत: आणण्यात आले. या प्रसंगी महाराजांनी केलेल्या भाषणात म्हटले की, ''माझ्या राज्यरोहणापासून जी सार्वजनिक महत्त्वाची कामे या राज्यात पूर्ण करण्यात आली आहेत, त्यात आजवा सरोवराची योजना सर्वात अधिक महत्त्वाची आहे. ही योजना म्हणजे माझ्या राज्यातील ३५०० गावांसाठी जी योजना करण्याचा माझा संकल्प आहे, त्याची पूर्वगामी तयारी आहे. खेडेगावांतून पिण्याच्या पाण्यासाठी विहिरींची सोय करण्यात आली आहे व जेथे ती अजून करण्यात आलेली नाही, तेथे ती लवकरच करण्यात येईल. ज्या ठिकाणी पाणी अगदी वर असेल, अथवा जेथे नदीची सोय असेल, अशा गावांखेरीज करुन इतर गावांतील वस्तीच्या दर शंभर लोकांमागे सहा ते आठ रुपयांच्या खर्चाने विहिरींतून पाणी काढून ते लोकांना पुरविण्याची व्यवस्था करण्यात आलेली आहे... परंतु या योजनेचा संपूर्ण फायदा घेण्यासाठी प्रजेचे सहकारित्व मला मिळाले पाहिजे.''

महाराज सयाजीरावांनी पाणी पुरवठ्याच्या विविध योजना राबविल्या. यापैकी काही ठळक योजना पुढीलप्रमाणे होत्या. शेतीसाठी पाणी पुरवठ्याची योजना कडी व पट्टण विभागांतील कादरपूर या गावात धरण बांधण्यात आले. या धरणाच्या बंधाऱ्याची लांबी १२००० फूट असून उंची २७ फूट आहे. या योजनेला एकूण सात लक्ष रूपये खर्च आला. हे धरण अपेक्षे पेक्षा फार मोठ्या स्वरूपाचे बनले होते. पावसाळ्यात या तलावाचा फक्त १/७ भाग व्यापिला जाई. त्यामुळे पिण्याच्या पाण्याची गरज पूर्ण होऊन उर्वरीत पाण्याचा वापर शेतीच्या लागवडीसाठी करण्यात येत असे. अशीच दुसरी योजना कडी प्रांतात अनावाडा धरणाने करण्यात आली. या योजनेला दोन लक्ष रुपये खर्च आला. बडोदे प्रांतातील संखेडा तालुक्यात ओरसंग नदीच्या पाण्याचे कालवे काढून शेतीच्या कामासाठी पाणी पुरविण्याची प्रचंड योजना याकाळात हाती घेण्यात आली. या मोठ्या योजनेच्या एकंदर खर्चाचा अंदाज वीस लक्ष रुपये होता. अशीच अजून एक जंगी पाणी पुरवठ्याची योजना बडोदे प्रांतातील डभोई विभागात वढवाणा तलावाच्या रुपाने इ.स.१९०६-०७ साली मंजूर करण्यात येऊन तिच्या कामाचा आरंभ इ.स.१९०७ च्या एप्रिल महिन्यात करण्यात आला. अशा विविध प्रकारच्या पाणी पुरवठ्याच्या योजना भविष्यात कराव्या लागणार असल्यामुळे इ.स.१९०४ सालापासून त्यासाठी पाणी पुरवठ्याचे खाते म्हणजेच स्वतंत्र इरिगेशन खाते निर्माण करण्यात आले. या शाखेकडे अशा प्रकारच्या योजना अंमलात आणण्यासाठी विविध भागांची पाहणी करणे, चालू योजना पुर्णकरणे व पूर्वीच्या कामांची दुरुस्ती करणे ही कामे सोपविली गेली. याचबरोबर मोठमोठ्या शहरात व गावात धरणे बांधून त्यातील पाणी लोकांना पुरविणे शक्य असले, तरी बाकीच्या सर्व खेडेगावांसाठी विहिरींची योजना करणेच शक्य व सुलभ असल्याने, ते कार्यही याकाळात जोराने करण्यात आले. त्यासाठी लागणारी नवीन प्रकारची यंत्रसामग्री मागवून ती लोकांना पुरविण्याचे कामही करण्यात आले.

४) बडोदे संस्थान सुजलाम् सुफलाम् :

जनतेला शुद्ध व मुबलक पाणी उपलब्ध व्हावे याची महाराज सयाजीराव गायकवाडांना जाणीव होती. याचबरोबर भविष्यात पाण्याची टंचाई निर्माण होऊन विविध समस्यांना सामोरे जावे लागेल यासाठी जनतेने पाण्याच्या बचतीचे महत्त्वही समजून घेतले पाहिजे, असे त्यांचे मत होते. भाद्रण येथील पाणीपुरवठा समारंभात बोलतांना महाराज म्हणाले, ''पूर्वी आपले पूर्वज शस्त्रास्त्रांच्या मदतीने लढाई करत. त्यावेळी शत्रू निराळे होते. आजचे शत्रू हे आहेत. अशुद्ध पाणी हा सुद्धा शत्रू आहे. खरे तर शुद्ध पाण्याला जीवन म्हटले आहे. ते देण्याचा राजा म्हणून मी प्रयत्न केला. मी यापूर्वी बडोदा शहराला नळाने पाणी पुरवठा करविला. शहराला मुबलक पाणी मिळू लागले; पण बडोदावासीय पाण्यासारख्या दैवी देणगीचा भलताच अपव्यय करत आहेत. पाणी म्हणजे एक ईश्वरी प्रसाद आहे आणि या प्रसादाची अशी नासधूस झालेली पाहून मला फार दु:ख होत आहे. म्हणून मी तुम्हाला विनंती करतो की, पाणी म्हणजे सोने आहे. नव्हे तर सोन्याहूनही ते मौल्यवान आहे. हे ओळखून तुम्ही पाण्याला जपत जा. पाणी म्हणजे प्रती प्राणच आहे. सोने, रुपे खर्चूनही आपण प्राण्यांचा सांभाळ करतोच ना? तसा तुम्ही पाण्याचा सांभाळ करा. दुष्काळाच्या दुर्धर प्रसंगी जगातील यच्चावत दौलत आणून ओतली, तरी पाण्याचा एक थेंबही आपण प्राप्त करू शकतो का? आपल्या पूज्य पूर्वजांनी नद्यादिकांना देवता मानून त्यांची पूजा केली. यातले मर्म तुम्हीं आता तरी ओळखा. तुमचे सध्याचे हे पाणी धातूच्या नळातून वाहत आले असले तरी गंगा-यमुना नद्यांच्या पवित्र जलाप्रमाणेच यालाही पूज्य माना. त्याचा वापर मुबलक करा; पण उधळपट्टी करू नका. पाणी फुकट वाहू देणे म्हणजे अथांग समुद्रात सोने फेकून दिल्यासारखे आहे. ही भावना सदैव जागृत असू द्या.''

अशाप्रकारे महाराज सयाजीराव गायकवाड यांनी आपल्या राज्यातील जनतेच्या सर्वांगिण विकासासाठी व त्यांच्या पिण्याच्या पाण्याची मुलभूत गरजेचे गांभिर्य लक्षात घेऊन पाणी पुरवठ्याच्या विविध योजना आखून त्यांची राज्यात सर्वत्र अंमलबजावणी केली. या योजनांचा राज्यातील सर्वच जनतेला लाभ व्हावा तसेच या योजनांचा प्रभावीपणे प्रसार व्हावा यासाठी त्यांनी स्वतंत्र इरिगेशन खात्याची निर्मितीही केली. शहरी भागांबरोबरच ग्रामीण भागातील जनतेलाही या योजनांचा लाभ मिळवून दिला. पाण्याचे महत्त्व किती आहे व पाण्याचा वापर कसा काटकसरीने करावा याविषयी आपल्या प्रजेला महाराजांनी वेळोवेळी प्रबोधनही केले. त्यांच्या या प्रयत्नांमुळे बडोदे संस्थान भविष्यात सुजलाम् सुफलाम् बनले यात शंका नाही. यावरून महाराज सयाजीराव गायकवाड यांची दूरदृष्टी तसेच जलव्यवस्थापन व जलसंवर्धन या विषयी ते कितीगंभीर होते, असे दिसून येते.

निष्कर्ष :

महाराज सयाजीराव गायकवाड यांच्या कुशल प्रशासनाचा अभ्यास केला असता सारांशतः असे दिसते की, महाराजांनी आपल्या राज्यारोहणानंतर प्रजेच्या कल्याणासाठी आपल्या राज्यात अमुलाग्र बदल घडवून आणले. राजसत्ता हाती येताच त्यांनी सर्वप्रथम बडोदे संस्थानाच्या सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजकीय व प्रशासकीय स्थितीचे सूक्ष्म अवलोकन केले. प्रजेच्या दैनंदिन अडचणी, त्यांचे राहणीमान, न्याय व्यवस्था, प्रशासकीय व्यवस्था, राज्याची आर्थिक स्थिती इ.बाबींची ओळख करून घेतली. राज्याची आर्थिक स्थिती पाहता सर्वप्रथम त्यांनी संपत्तीचा अनाठायी खर्चास पायबंद घालण्यास सुरूवात केली. राज्याचा निधी राजा आणि राजघराण्यातील मंडळींच्या फक्त हौस मौजेसाठी नाही, यासाठी प्रसंगी स्वतःवर अथवा राजपरिवारातील लोकांवर होणाऱ्या अनावश्यक खर्चात कपात केली. तत्पश्चात् राज्यकारभाराची पद्धत, दरबारातील अधिकारी, पदाधिकारी व कर्मचारी यांच्या कारभारात सुधारणा घडवून आणली. राजकारभार उत्तम व जलदगतीने चालावा यासाठी विविध प्रज्ञावंतांना आपल्या दरबारात मानाचे स्थान देऊन त्यांना कार्यात रूजू करून घेतले. हुशार, बुद्धीमान व कार्यतत्पर लोकांना आपल्या संस्थानात सामावून त्यांच्यामार्फत प्रजेच्या कल्याणासाठी विविध योजना राबविण्यास सुरूवात केली. राज्याचे उत्पन्न मुख्यतः जमीन महसुलावर अवलंबून असल्याने जमीन महसुलाची पुनर्रचना करून त्यात आमुलाग्र आधुनिक बदल घडवून आणले. प्रशासनात प्रजेस आपली बाजु मांडण्यासाठी, त्यांचे सर्वांगिण कल्याण घडवून आणण्यासाठी व स्वकल्याणासाठी ग्रामसंस्था पुनरूज्जीवन करून त्यांना आपला हक्क मिळवून दिला. साथीचे रोग, दुष्काळ व अवर्षणासारख्या नैसर्गिक आपत्तींचा सामना करण्यासाठी आपत्ती व्यवस्थापनावर भर देण्यात आला. नगररचनेत आधुनिक बदल घडवून विविध वास्तुंची उभारणी करण्यात आली. सार्वजनिक बांधकामाद्वारे सुंदर इमारती, रस्ते, पाझर तलाव, बंधाऱ्यांची निर्मिती केली. राज्याची आर्थिक सुबत्ता वाढावी यासाठी जल व्यवस्थापन व पाणी पुरवठ्याच्या मोठ-मोठ्या योजना अस्तित्वात आणल्या. राज्यातील जनतेच्या आर्थिक प्रश्नांना वाचा फोडण्यासाठी सहकाराची तत्वे रूजवून त्यास जनमानसापर्यंत पोहोचविण्याचे कार्य केले. राज्यातील बहुतांश जनता शेतीवर अवलंबून असल्याने शेती व शेतीपूरक उद्योगास प्रोत्साहन देऊन जनतेच्या कल्याणाचे कार्य केले. रस्ते वाहतुक यंत्रणा सक्षम करून दळणवळणासाठी साधन उपलब्ध करून दिले. लोहमार्गाचे जाळे राज्यभर पसरवून रेल्वेचे विस्तारीकरण केले. शिक्षणाचे महत्त्व प्रजेत रूजवून शिक्षण क्षेत्रास पुरक असे वातावरण निर्माण केले. बडोदा राज्यात उभ्या राहिलेल्या शाळा, कॉलेजेस, ट्रेनिंग स्कूल, औद्योगिक शाळा, शेतकीशाळा, तंत्र शिक्षण देणार्या संस्था ही उदाहरणे आहेत. अशाप्रकारे महाराजांनी आपल्या प्रशासकीय कारकिर्दीत प्रजेच्या कल्याणासाठी आरोग्य, शेती, न्यायव्यवस्था, महसूल, कायदे, जल व्यवस्थापन, उद्योग-धंदे अशा सर्वच बाबींवर लक्ष केंद्रित करून एक आदर्श राज्याची निर्मिती केली. थोडक्यात, ते अत्यंत कुशल प्रशासक होते यात तीळमात्र शंका नाही, असे संशोधकास वाटते.

संदर्भग्रंथ

1. भांड बाबा- महाराजा सयाजीराव गौरवगाथा युगपुरूषाची, खंड-१२, महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्रसाधने प्रकाशन समिती, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती २०१७.
2. आपटे दाजी नागेश-श्री.महाराज सयाजीराव गायकवाड (तिसरे) यांचे चरित्र (इ.स.१८८७-१९११), खंड २ रा, प्रकाशक आपटे दाजी नागेश, बडोदा.
3. गायकवाड सयाजीराव-हुजूरहुकूम, बडोदे राज्यदफ्तर खात्याचे प्रकाशन, १९३६.
4. पवार निंबाजीराव-जेव्हा गुराखी राजा होतो... श्रीमंत महाराज सयाजीराव गायकवाड, सयाजी प्रकाशन, नाशिक, द्वितीय आवृत्ती१९८८.
5. दांडेकर वि.पा.-सयाजीराव गायकवाड, ग.ल.ठोकळ प्रकाशन, पुणे-१९५३.
6. पगार एकनाथ-महाराजा सयाजीराव गायकवाड यांचा पत्रसंग्रह, खंड-३, भाग-१, महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्रसाधने प्रकाशन समिती, औरंगाबाद, पहिली आवृत्ती-२०१७

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 5 सितंबर-अक्टूबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की
मानक शोध पत्रिका

IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

भारत में समाजवादी आंदोलन और राजनीतिक दल: एक विश्लेषण–डॉ० हरिश्चन्द्र प्रसाद यादव
शकुन एवं अपशुकन का भ्रम जाल–डॉ० सरोज मीना
शिक्षा के अधिकार अधिनियम की उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ–डॉ० अनीता सती
हिमाचली लोक साहित्य में लोकगाथाएं (लाहौल व कुल्लू के संदर्भ में)–डॉ० उरसेम लता
अहीरवाल के लोकगीतों में राग तत्व व ताल तत्व का समावेश–डॉ० रविन्द्र कुमार
मिथिला में लोक नृत्य: एक ऐतिहासिक विष्लेषण–आलोक कुमार मिश्र
नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा–विभा कुमारी
भारतीय संगीत में प्रयुक्त वाद्य यंत्रों में पशुधन की भूमिका: एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन–डॉ० मुकेश
भारत में आर्थिक विकास, योजना और सामाजिक परिवर्तन–डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर
विवेकी राय जी के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की सामाजिक, आर्थिक, एवं धार्मिक समस्याओं का अध्ययन–डॉ० बबीता देवी
"काव्य में अभिव्यंजना और कला" प्राकृत काव्य के संदर्भ में–डॉ० दुधनाथ चौधरी
संस्कृत की चुनौतियाँ एवं समाधान–डॉ० सन्तोष देवी
पंचायती राज संस्थान और भारत में ग्रामीण विकास - संरचनात्मक और कार्यात्मक आयाम–शीला मिश्रा
सामाजीकरण के संदर्भ में बाल विकास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–सुलेखा झा

भारत में आर्थिक विकास, योजना और सामाजिक परिवर्तन

डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर

सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभाग प्रमुख, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, अक्कलकुवा, महाराष्ट्र

Abstract:

आर्थिक विकास आणि सामाजिक बदल इंग्लिश अर्थशास्त्रज्ञ विकस्टीड यांनी एकदा म्हटले होते की, जोपर्यंत त्याच्याकडे खायला काही नसेल तोपर्यंत संत, कवी किंवा प्रेमी होऊ शकत नाही. राष्ट्रांमध्ये असेही म्हणता येईल की, राजकीय विकास, सांस्कृतिक उपलब्धी आणि परिवर्तन आणि सामाजिक प्र... केवळ किमान जीवनमान गाठणे शक्य आहे. किंवा, आपण असे म्हणू शकतो की, सामाजिक प्रगती आर्थिक विकासावर अवलंबून असते. प्रश्न असा आहे... आर्थिक विकास म्हणजे काय? आर्थिक विकासाची पूर्वआवश्यकता काय आहे किंवा कोणते घटक वाढीस हातभार लावतात? भारतासह जगातील अविकसित... भागात आर्थिक विकासाला कशामुळे अडथळे येतात? आर्थिक विकासाच्या समाजशास्त्रीय पैलू आणि सामाजिक समस्यांशी संबंधित होण्यापूर्वी हे काही महत्त्वाचे प्रश्न समजून घेतले पाहिजेत.

प्रस्तावना:

आर्थिक विकासाची संकल्पना व्यापक अर्थाने, आर्थिक विकासाकडे " कोणत्याही स्रोतातून दरडोई वास्तविक उत्पन्नातील वाढ" (रॉबर्ट फारिस, 1... 889) म्हणून पाहिले जाऊ शकते. बाख (1960: 167) यांनी "अर्थव्यवस्थेतील वस्तू जेव्हा आर्थिक वस्तूंचे भरीव उत्पादन आणि आजकाल भरीव ... तंत्रज्ञानाच्या अधिक वापरावर अवलंबून आहे. संकुचित अर्थाने, म्हणून असे म्हटले जाऊ शकते की आर्थिक विकास म्हणजे "आर्थिक वस्तूंचे उत्पादन ... वितरणासाठी निर्जीव शक्ती आणि इतर तंत्रज्ञानाचा व्यापक वापर" (रॉबर्ट फारिस, इबिड: 889). या अर्थाने, आर्थिक विकास व्यावहारिकदृष्ट्या औद्योगिकीकरणाशी समतुल्य आहे. परंतु आर्थिक विकास म्हणजे केवळ औद्योगिकीकरण होय असे म्हणणे योग्य ठरणार नाही कारण उत्पादनात शक्ती आणि तंत्रज्ञान ... करण्याबरोबरच त्यात श्रमिक गतिशीलता, व्यापक शैक्षणिक व्यवस्था इत्यादींचाही समावेश होतो

स्वतंत्रता के बाद भारत में आर्थिक विकास को वास्तव में एक क्रांतिकारी परिवर्तन के रूप में वर्णित किया जा सकता है, अगर हम ब्रिटिश काल में ... विकास की तुलना लगभग दो दशकों के नेहरू काल (स्वतंत्रता के बाद) में करते हैं।, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की अवधि लगभग दो ... पिछले तीन वर्षों की अवधि (वीपी सिंह, चंद्रशेखर और नरसिम्हा राव की सरकारों की)। 1757 और 1947 के बीच ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ... शताब्दियों में आर्थिक विकास 1 प्रतिशत या उससे कम था, विकास की दर इतनी दयनीय रूप से कम थी कि इसने भारत को केवल कच्चे माल ... आपूर्तिकर्ता बना दिया और एकआर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन पश्चिमी निर्यात के लिए 443 अंतराल बाजार। औद्योगिक क्षेत्र पर ब्रिटिश ... अत्यधिक दबदबा था। भारतीयों के स्वामित्व वाले औद्योगिक क्षेत्र के एक हिस्से का प्रबंधन ब्रिटिश एजेंसियों द्वारा किया जाता था। कृषि अर्थव्यवस्था ... किसान जमींदारों, जागीरदारों और स्थानीय साहूकारों (साहूकारों) के चंगुल में थे। बचत और निवेश बहुत कम थे। तकनीक निम्न स्तर की थी। ... क्षेत्र के विकास के माध्यम से क्षेत्रीय संतुलन की कोई अवधारणा नहीं थी। भारत के निर्माण के लिए विदेशी पूंजी उपलब्ध नहीं थी। कम आय से कम ... होती है, जिससे कम निवेश होता है, जिससे कम वृद्धि होती है, जिससे कम आय होती है। गरीबी के दुष्चक्र और निराशा के कभी न खतम होने वाले ... का सिद्धांत औपनिवेशिक काल की अर्थव्यवस्था के लिए काफी उपयुक्त था। आजादी के बाद, नई सरकार के लिए कार्य दो गुना था: औपनिवेशिक ... अर्थव्यवस्था को खत्म करना और उसके स्थान पर एक आधुनिक, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर आर्थिक व्यवस्था के लिए आधार तैयार करना। देश की आधुनिक ... अर्थव्यवस्था और राष्ट्रवाद का खाका-समाज का समाजवादी पैटर्न- 1955 में कांग्रेस के आवादी अधिवेशन (नेहरू युग के दौरान) और 1969 में बैंगलोर ... अधिवेशन (इंदिरा गांधी युग के दौरान) द्वारा प्रदान किया गया था। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि समाजवाद के नेहरू मॉडल ने 19... 1960, 1970 और 1980 के चार दशकों में हमारी अर्थव्यवस्था में सुधार किया, हालांकि एक ऐसा स्कूल है जो अर्थव्यवस्था के विकास की तुलना में ... (नेहरू मॉडल के) प्रदर्शन की निंदा करता है। दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, हांगकांग, थाईलैंड और ताइवान में। अब हमारे पास लाखों आधुनिक औद्योगिक ... है जहां एक बार लेकिन कुछ मुट्ठी भर हमारे पास तकनीकी और उद्यमशीलता कौशल का एक बड़ा भंडार है; हमारे पास भिलाई और राउरकेला जैसी ... सार्वजनिक परियोजनाएं हैं और हीराकुड जैसे बड़े बांध हैं; विकासशील देशों में हमारे पास बचत की उच्चतम दर है; हमारी विकास दर 5 प्रतिशत प्रति ... थी (1990-91 में); डॉलर के लिहाज से निर्यात में सालाना 17 फीसदी की धीमी वृद्धि; अनिवासी भारतीयों (एनआरआईएस) की जमाराशियों में बीस ... वृद्धि; अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में अद्वितीय विश्वसनीयता; और सरकार द्वारा दावा किए गए अनुसार 1990 में 1980 से 26 प्रतिशत तक गिर गया)। इस विकास ... के बावजूद, यह भी एक सच्चाई है कि हम मुद्रास्फीति और उच्च ऋण की समस्या का सामना कर रहे हैं। व्यापार घाटे का संतुलन 3,000 मिलियन ...

के बाद वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर सरकार की नीतियों ने 1988 और 1991 के बीच देश की अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डाला। 444 आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन नरसिम्हा राव की सरकार ने 1992 की शुरुआत देश और उदारीकरण, बाजारीकरण और निजीकरण (जिसे अब नेहरू पूंजीवाद कहा जाता है) के दर्शन पर आधारित एक का, जिसका दावा कांग्रेस सरकार करेगी। हमारे आर्थिक विकास को एक बड़ा बढ़ावा दें।

एक नए मॉडल का सार यह है कि यह राज्य के साथ-साथ निजी उद्यमियों में विश्वास को जोड़ती है, और बहुल लोकतंत्र विश्वास रखती है। अप्रैल 1992 में कांग्रेस के तिरुपति अधिवेशन ने एक नया वैचारिक प्रतिमान अपनाया जो कि केंद्र के यह नेहरू के नाम पर नेहरू को हटाने की एक तकनीक थी। इसने ध्यान केंद्रित किया: विभिन्न क्षेत्रों (कृषि और सार्वजनिक एजेंडों में कटौती, लाइसेंस-प्रति-मित्रराज को त्यागना, मौजूदा नीति को पेश करना, बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए देश को खोलना, और जनता के साथ व्यवहार नहीं करना क्षेत्र केवल एक गैर-कार्य नैतिकता की विशेषता वाली नौकरी वितरण एजेंसी के रूप बनी रही जबकि नीतियों की सामग्री प्रतिशोध के साथ पूंजीवादी हो गई। ऐसे विद्वान हैं जो यह नहीं मानते कि वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करेगी। उनका मानना है कि आयात पर प्रतिबंध लगाकर, निर्यात को बढ़ावा देकर, क्षेत्र को नौकरशाही से मुक्त करके, काले धन का पता लगाकर, रक्षा खर्चों में कटौती करके, प्राकृतिक संसाधनों के के लिए बहुत बड़ा बाजार, कट्टरपंथी भूमि सुधार लाना, और इसी तरह। ये विद्वान यह भी मानते हैं कि देश को बाहरी होना चाहिए। सामाजिक रूप से, यह माना जा सकता है कि आर्थिक विकास - नेहरू और उदार मॉडल दोनों के माध्यम को उस दिशा में प्रभावित किया है जैसा हम चाहते थे। हमारे समाज-विकासवादी (चरणों की श्रृंखला में समाज के विकास और सत्ता के लिए निरंतर संघर्ष पर जोर देना), कार्यात्मक (सामाजिक में अन्य सभी तत्वों के लिए प्रत्येक संस्थागत अध्याय के मूल्यांकन के लिए हम जो भी समाजशास्त्रीय मॉडल का उपयोग कर सकते हैं। संरचना), आदि - यह स्पष्ट होगा कि सामाजिक प्रणालियों और सामाजिक संरचनाओं, और सामाजिक मानदंडों आदि के नेटवर्क में परिवर्तन हुआ है।

नहीं हैं। सदी पहले। वे नैतिक मानदंडों से दृढ़ता से नहीं चिपके रहते हैं औरआर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन 445
के प्रति हुए। पुरुष व्यक्तिगत रूप से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक सुरक्षा के लिए प्रयास करते हैं। उनके दृष्टिकोण, औजारों
हैं। वे नए अनुभवों की कामना करते हैं। उनमें न केवल प्रौद्योगिकियों को उधार लेने की जिज्ञासा है बल्कि सांस्कृतिक
करते हैं। उनमें नवोन्मेष के लिए एक रचनात्मक आग्रह है। वे नवाचारों और सामाजिक परिवर्तनों की स्वीकृति के परिणामों
हैं। वे गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई, भाई-भतीजावाद, आतंकवाद, जातिवाद और क्षेत्रवाद आदि की समस्याओं को कम
सत्ता अभिजात वर्ग के खिलाफ विरोध और आंदोलन कर सकते हैं, फिर भी वे जानते हैं कि भारत में सामाजिक व्यवस्था
असमानता का। हितों के विचलन के साथ भारतीय संस्कृति न केवल जीवित रहेगी बल्कि विकसित भी होगी। सामाजिक
के स्थान पर, सामाजिक संरचनाओं और सामाजिक व्यवहार-पारंपरिक और संक्रमणकालीन को सुराग और दिशा प्रदान करेगा।

Vora and Co., Bombay, 1959.

logical Aspects of Economic Growth, Current Thought Series, Vakils, Feffer & Simons, Bombay, 1960.

spects of Economic Development, Randour House, New York, 1962.

Change and Economic Development, UNESCO Publi- cation, 1963.

Aspects of Economic Development" in Robert Faris (Ed.), Handbook of Modern Sociology, Prentice Hall, Englewood

Change Strategy in a Developing Society, Meenakshi Prakashan, Meerut, 1970.

ical Approach to Economic Development" in Novack David (Ed.), Development and Society: The Dynamics of

20-21

ISSN 0975-[illegible]

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

[illegible] मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

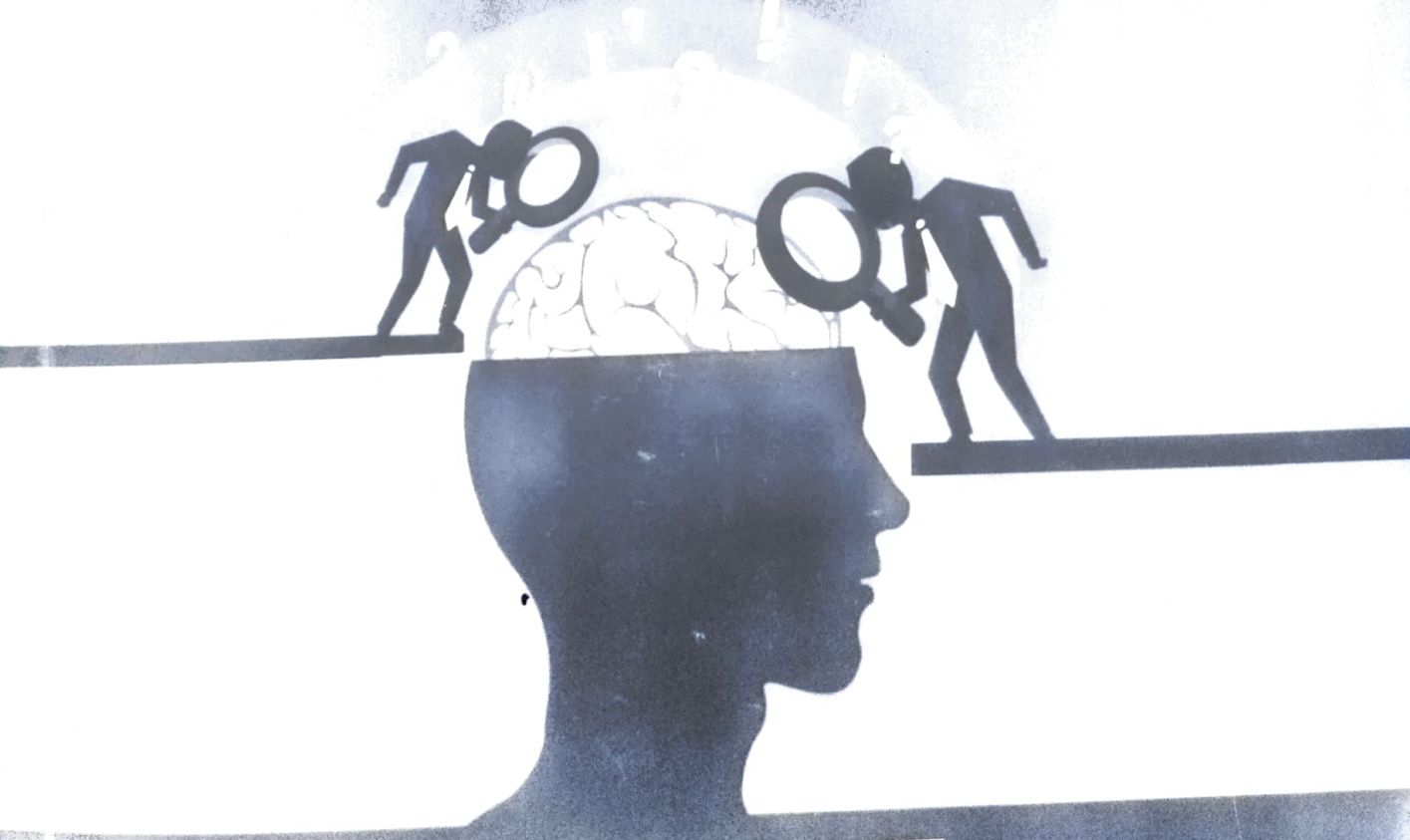

IMPACT FACTOR : 5.051

सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक प्रयोग–डॉ॰ दीपमाला गुप्ता; ऋतु मिश्र 4909
अहीरवाल के लोक जीवन में लोक संगीत–डॉ॰ रविन्द्र कुमार 4912
मध्याह्न भोजन योजना: हरियाणा के भिवानी जिले में तोशाम खंड का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–सरोज कुमारी; प्रदीप कुमार 4915
आई. सी.टी. का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्त्व–डॉ॰ धीरेन्द्र सिंह यादव 4922
भारत में महिलाओं के विरूद्ध बढते अपराध के कारण–डॉ॰ अर्चना 4926
ऐतिहासिक स्रोत के रूप में जातक साहित्य–रेशमा खातून 4928
मिथिला: एक वैष्वीकृत कला रूप–आलोक कुमार मिश्र 4930
गिरनार किले का एतिहासिक महत्व–पंचाल मायाबेन ए. 4933
डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री का ऐतिहासिक शोध में प्रदान–पटेल रसनाबेन के. 4936
कार्मिक प्रशासन की प्रासंगिकता का एक अध्ययन–श्यामल किशोर ठाकुर 4939
अंतरराष्ट्रीय प्रवासन : कारण और सामाजिक प्रभाव–डॉ॰ जे॰ पी॰ भट्ट; कमल कुमार 4942
मोहन राकेश की बाल कहानियाँ: समीक्षात्मक अध्ययन–मीनाक्षी 4947
स्थानीय स्वशासन और स्वच्छ भारत अभियान' (बिरसिंहपुर नगर परिषद् का एक अध्ययन)–डॉ॰ अनुराधा जैन; पवन कुमार गुप्ता 4951
स्वामी विवेकानन्द का दर्शन और राष्ट्रवाद–अमीत कुमार अमन 4954
'कन्या दिवस' गीत का रसदर्शन–रबारी दिनेश के. 4958
भारत में सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन का संक्षिप्त अध्ययन–डॉ॰ त्रयम्बकेश्वर कुमार 4964
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग- हरियाणा के संदर्भ में इसके प्रशासनिक संगठन एवं प्रबन्धन का एक भौगोलिक विश्लेषण –डॉ॰ जोगेन्द्र सिंह खोखर 4968
पत्रकारिता में बाबासाहेब अम्बेडकर का योगदान–डॉ॰ अनिल विठ्ठल बाविस्कर 4974
रीवा संभाग में वनों का वितरण एवं वन्यजीव संवर्द्धन:- एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ॰ प्रदीप सिंह; सितेश भारती 4977
विवेकी राय के उपन्यासों में भाषा एवं शिल्प पक्ष–डॉ॰ बबीता देवी 4981
कर्म एवं पुनर्जन्म: एक अनुचिंतन–डॉ॰ दुधनाथ चौधरी 4985
भट्टिकाव्य में प्रयुक्त प्रत्ययान्त धातुओं की व्याकरणिक प्रक्रिया–ध्रांगी सुरेशकुमार बाबूलाल 4988
अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं वर्तमान परिदृश्य–डॉ॰ वैशाली देवपुरा 4991
विश्वशान्ति में संस्कृत का योगदान–डॉ॰ सन्तोष देवी 4996
भारतीय उच्चतम न्यायालय में अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में राजभाषा हिन्दी का स्थान–अरविन्द कुमार गुप्ता 4999
पंडित दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्रवाद - एक अध्ययन–अंकेश कुमार 5002
स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद - एक अध्ययन–रंजन कुमार 5006
अस्तित्व के आइने में किन्नर: एक विश्लेषण–प्रिया सिंह; प्रोफेसर शार्दूल विक्रम सिंह 5009
जीवन कौशल शिक्षा और शिक्षण विधियों का महत्व–डॉ॰ संजीव कुमार 5013
बिहार में महिला सशक्तिकरण: एक अध्ययन–नीतू कुमारी; प्रो॰ मुनेश्वर यादव 5018
खुमाण रासो में वर्णित सामाजिक परम्परा का ऐतिहासिक विवेचन–डॉ॰ सोनल चौहान 5022
ज्ञानेन्द्रपति की कविताओं का विश्लेषण–नेहा कुमारी 5027
भारत के आर्थिक विकास में महिला श्रमिकों की भूमिका–किरन सिंह 5030
ऋग्वेद में नारी की स्थिति–विशाल मणी 5033
पंचायती राज संस्थान में महिला ग्रामीण नेतृत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–शीला मिश्रा 5036
बच्चों के जीवन में समाजीकरण के विकास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–सुलेखा झा 5041

पत्रकारिता में बाबासाहेब अम्बेडकर का योगदान

डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर

सहयोगी प्राध्यापक, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,अक्कलकुवा, नंदूरबार

परिचय:

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर एक बहुत ही ईमानदार और सच्चे पत्रकार, शोधकर्ता, चिकित्सक और इस तरह के समाज के पत्रकार के वास्तविक पूर्वज हैं और भारतीय समाचार पत्र उद्योग में एकमात्र पत्रकार हैं जो भारतीय समाचार पत्र उद्योग में एकमात्र पत्रकार हैं जिन्होंने बल का पालन किया है फोन राइटिंग स्किल्स और एडिटेड टूथ.हो रहा है उस समय की अलगाववादी और जातिवादी व्यवस्था पर हमला करने वाले एकमात्र संपादक डॉ. साहेब अम्बेडकर, जिन्होंने अपने निरंतर संघर्षपूर्ण जीवन में मुलुख फील्ड गन का ठोस प्रहार किया और संस्थापकों के किले को सुरंग बना दिया। बाबासाहेब आंबेडकर मीडिया कारण बने। इसलिए बहुजन का लेखन खुला था। इसीलिए आज भी बहुजन के अखबारों ने सरकार और प्रशासन के खिलाफ लिखना शुरू कर दिया। बाबासाहेब को समाजोन्मुख पत्रकारिता में छुपा है। डॉ। बाबासाहेब की पत्रकारिता मेहनतकश जनता के प्रतिरोध की प्रतिक्रिया थी। डॉ। बाबासाहेब ने समानता, जनता, मुखनायक, प्रबुद्ध भारत, बहिष्कृत भारत आदि का आह्वान किया। सामाजिक चेतना पैदा करने के लिए अखबारों के रूप में धारदार हथियारों का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने सामाजिक जागरुकता और समाज कल्याण को अंतिम और प्रथम लक्ष्य मानकर मीडिया की भीड़ में अपनी अलग पहचान बनाए रखी।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने साहस और वाक्पटुता से अपनी कलम चलाई और दुनिया के सामने यह तर्क पेश किया कि तत्कालीन व्यवस्था का जहर पंचनामा कला और सत्य था। समाजोन्मुखी मुद्दों को पहली प्राथमिकता और सिद्धांत देकर आम आदमी की आवाज को बुलंद किया। सर्वप्रथम डॉ. बाबासाहेब आज को पेशेवर या व्यवसायोन्मुख पत्रकारिता नहीं चाहते थे। उन्होंने समाज कल्याण के लिए ही प्रेस की शुरुआत की। 1920 में मुखनायक। 1927 में पान को बाहर कर दिया। 1928 में समानता 1929 में जनता और 1956 में प्रबुद्ध भारत पखवाड़ा। उन्होंने कभी समझौता या समझौता नहीं किया। समुदाय उन्मुख पत्रकारिता के पूर्णकालिक अध्यक्ष के रूप में डॉ. बाबासाहेब को तत्कालीन ब्रिटिश मीडिया ने भी नोटिस किया था। भारतीय मीडिया को कम से कम अपनी सनक छोड़ देनी चाहिए क्योंकि अधिकांश अखबारों ने अपने सामाजिक-उन्मुख चेहरे को बदल दिया है और सुधारवादी बन गए हैं। वैकल्पिक रूप से, समाचार पत्रों का चेहरा कम से कम सामाजिक हित और अधिक से अधिक व्यावसायिक समाचारों का उच्चीकरण है। चौनल का रियलिटी शो गाथा खत्म हो गया है। यह एक अप्रत्यक्ष घोषणा की तरह लगता है। समग्र वर्तमान स्थिति में अब समाज का रक्षक और समाज का संरक्षक नहीं रह गया है। लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ ऐसी ही विकट स्थिति से गुजर रहा है तो डॉ. बाबासाहेब के समाजोन्मुख पत्रकारिता हड़ताल की मशाल सदा जलती रही।

शोध के उद्देश्य :-

1) डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के पत्रकारीय योगदान को जानें
2) डॉ. पत्रकारिता पर बाबासाहेब अम्बेडकर के विचारों का अध्ययन करना।
3) आज पत्रकारिता की भूमिका की व्याख्या कीजिए

संशोधन पद्दतियाँ :-

उक्त शोध निबंध एवं द्वितीयक सामग्री पर आधारित है तथा इस शोध निबंध के लिए पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों का प्रयोग किया गया है। आज पत्रकारिता का क्षेत्र विज्ञापन के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा में फंस गया है और भ्रष्ट पक्षपातपूर्ण राजनेताओं के प्रभाव में है। लेकिन सही मायने में मुखनायक की आवाज उठाने वाले आज देखा नहीं जाता और कहाँ है आज की पत्रकारिता? बाबासाहेब की पत्रकारिता की नजर में आज की पत्रकारिता दयनीय नजर आती है। आज की पत्रकारिता व्यापारोन्मुखी नजर आती है। बहुजनवादी समाचार पत्रों को अपनी आय का कुछ प्रतिशत सामाजिक ऋण की अदायगी के रूप में तभी देना चाहिए जब डॉ. यह बाबासाहेब अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने जैसा होगा। तब बहुजनों को आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत है। पत्रकारिता के क्षेत्र में आदर्श मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों को लटका कर पत्रकारिता करने वाले संपादकों को बाबासाहेब कहते हैं कि नैतिकता अखबार की रीढ़ होनी चाहिए और आगे कहते हैं, 'समाचार पत्र का नेटवर्क और सक्रिय कार्यकर्ताओं का नेटवर्क रहस्य है सामाजिक उन्मुख पत्रकारिता की।' बाबासाहेब ने समाजोन्मुख और खुले विचारों वाली पत्रकारिता को न्याय देने की अपील कर पत्रकारिता को एक नया मानक प्रदान किया। आज भी दीपक के खंभे की तरह खड़ा रहने वाला प्रकाश प्रकाश दिखाता है।

अखबार और कार्य:

31 जनवरी, 1920 को अम्बेडकर ने अछूतों के खिलाफ चल रहे अन्याय की निंदा करने के लिए 'मुकनायक' के पहले पखवाड़े की शुरुआत की। उसके लिए उन्हें कोल्हापुर संस्थान द्वारा नियुक्त किया गया था। शाहू महाराज ने आर्थिक मदद की थी। 1924 में उन्होंने 'बहिष्कृत मेला' समाचार पत्र प्रारंभ किया

... का पहला अंक 3 अप्रैल को प्रकाशित हुआ था। बाबासाहेब ने 29 जून 1928 को समता समाचार पत्र की शुरुआत की। यह समाज ... था। 24 फरवरी, 1930 को उन्होंने जनता की स्थापना की और 4 फरवरी, 1956 को उन्होंने 'प्रबोध भारत' समाचार पत्र प्रारंभ किया। ... ने जनता अखबार में ब्हम सत्ताधारी जमात बनार बनेंगेश शीर्षक से एक लेख लिखा। उन्होंने इन समाचार पत्रों के माध्यम से अपने विचारों ... अस्पृश्यों को जागृत किया। उनका लेखन उग्र, क्रांतिकारी और अत्यधिक प्रभावी है।

...अखबार का कामः-

... जा सकता है कि समाचार पत्रों ने हमेशा समाज सुधार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता-पूर्व युग में, समाचार पत्रों ने अंग्रेजों के ... राजनीतिक असंतोष पैदा करने और अन्याय के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐसे अखबार देश की आजादी के लिए स्टैंड ... हुई थी। इसी दौर में कुछ अखबारों की भूमिका सामाजिक आजादी की थी। वह समाज में छुआछूत, जातिगत भेदभाव को खत्म करने की कोशिश ... था। इन्हीं समाचार पत्रों के माध्यम से शिक्षा के महत्व को समझाते हुए यह देखा गया कि समाज में अंधविश्वास को खत्म करने के लिए ... के लिए लोगों में जागरूकता पैदा की गई। डॉ। बाबासाहेब आबेडकर ने एक अखबार शुरू करने का फैसला किया।

... बाबासाहेब अम्बेडकर को केवल संविधान निर्माता और दलितों के नेता के रूप में देखा जाता है। लेकिन वे एक संपादक थे, एक पत्रकार थे। एक ... का अखबार जिसने सामाजिक सुधार में योगदान दिया। प्रेरणा से डॉ. आबेडकर ने समाचार पत्र प्रकाशित करने का विचार प्रस्तावित किया। 31 ... को यह महसूस करने के बाद कि समाचार पत्र आधुनिक युग है और प्रगति सार्वजनिक शिक्षा का सबसे अच्छा साधन है, इसके माध्यम से ... अधिकारों की मांग उठाई जा सकती है. मूकनायक है पाक्षिक सुरु किया

...अंबेडकर की पत्रकारिताः

... अखबारों के इतिहास में एक दलित पत्रकार के रूप में अंबेडकर की उपलब्धियां मूल्यवान हो गई। उन्होंने मुख्यनायक (31 जनवरी 1920), ... (1927), जनता (1930) और प्रबुद्ध भारत (1956) नामक चार पत्र चलाए। डॉ। बाबासाहेब अम्बेडकर समाज समता संघ के अध्यक्ष थे। ... इस दल का मुखपत्र था। डॉ। अम्बेडकर कुछ समाज सुधारकों के साथ 1919 में बंबई में शाहू महाराज से मिले। इस यात्रा के दौरान उन्होंने ... प्रस्तावित किया था। जैसा कि शाहू महाराज को यह विचार पसंद आया, उन्होंने तुरंत डॉ. अम्बेडकर को स्वयं ढाई हजार रुपये की आर्थिक ... मूकनायक ने शुरुआत वहीं से की। गैर-ब्राह्मण पत्रकारिता दलित मुद्दे के साथ न्याय नहीं कर सकी। मुखनायक शुरू करने के पीछे कोई ... नहीं था। वर्ष 1917 में, ब्रिटिश सरकार ने देश में विभिन्न जातियों और जनजातियों के मतदान अधिकारों के बारे में पूछताछ करने के लिए सतर्कता ... नियुक्ति की। इस आयोग के समक्ष दलितों की दुर्दशा को ठीक से प्रस्तुत नहीं किया गया। इसी अहसास से उन्होंने पत्रकारिता की ओर रुख किया। ... मूकनायक के संपादकीय कार्य का जिम्मा एक युवक पांडुरंग नंदराम भाटकर को सौंपा। मुकनायक से डॉ. हालाँकि अम्बेडकर ने दलित मुद्दों को उठाया, ... समय आंदोलन के मुखपत्र नहीं बन सके; क्योंकि मुखनायक के शुरू होने के कुछ ही महीनों बाद डॉ. अम्बेडकर लंदन चले गए होते। वहां ... 1923 को भारत लौटे। 20 जुलाई, 1924 को उन्होंने भिस्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। यहीं से 3 अप्रैल, 1927 को पाक्षिक पत्र ... का उदय हुआ।

... को मूकनायक प्रसिद्ध हो जाता था। शीर्षक के बाई ओर सदस्यता दर है और दाई ओर विज्ञापन है। मामूली मुद्दे की कीमत को दौड़ में लाया ... यह मित्रा के मनोरंजन प्रेस में छपा था। मुकनायक में डॉ. अम्बेडकर ने चौदह लेख लिखे। डॉ। अम्बेडकर के विदेश जाने के बाद मुकनाइक ... बाद में, ज्ञादेव ध्रुवनाथ घोलप ने भाटकर से सूत्र ग्रहण किया। हालांकि, 1923 में मूकनायक बंद हो गया।

... भारत के संपादक, मुद्रक और प्रकाशक डॉ. अम्बेडकर ही थे। उन्होंने इसका उल्लेख पाक्षिक पत्र के रूप में किया है। डॉ. डॉ. अम्बेडकर ने ... को भेजा। उन्होंने एक शुक्रवार को बनिष्कृत भारत और एक शुक्रवार को समता के साथ कुछ समय के लिए प्रयोग भी किया। बहिष्कृत भारत ... से पहले बहिष्कृत निधि के लिए डा. अंबेडकर ने अपील की.. लेकिन ज्यादा प्रतिक्रिया नहीं मिली। कुल दो वर्षों के दौरान सुश्री. यह पत्र नौ ... रहा। आखिरकार 15 नवंबर 1929 को यह पत्र बंद कर दिया गया।

... बाद 24 नवंबर 1930 को जनता का पहला अंक प्रकाशित हुआ। देवराम विष्णु नाइक इसके संपादक थे। जनता पहला पखवाड़ा था। फिर 31 ... 1931 को यह साप्ताहिक हो गया। जनता के रिटेल इश्यू की कीमत डेढ़ आना और दो रुपए दस आना सालाना थी। जनता शीर्षक के तहत अंग्रेजी ... लिखा गया था। अपने पेशे के कारण डॉ. अम्बेडकर को लेखन के लिए पर्याप्त विकल्प नहीं मिले लेकिन उन्होंने हमेशा सामाजिक और शैक्षिक ... लिखा। जनता पत्र पच्चीस वर्षों तक (1955 तक) नियमित रूप से चला। बी.डी. कादरेकर, श्री. सहस्त्रबुद्धे, बी.सी. कांबले और यशवंतराव अंबेडकर ... ने जनता का संपादन किया। 4 फरवरी, 1956 को जनता प्रबुद्ध भारत का नाम बदल दिया गया। 6 दिसंबर, 1956 को डॉ. अम्बेडकर के निर्वाण ... बाद इस पत्र के लिए एक संपादकीय मंडल नियुक्त किया गया। यशवंतराव अम्बेडकर संपादक के रूप में। मुकुंदराव अंबेडकर, डा. रूपवटे, शंकरराव ... और बी.डी. कादरेकर ने सफलतापूर्वक जिम्मेदारी संभाली। 3 अक्टूबर 1956 को रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के गठन के बाद, प्रबुद्ध भारत पार्टी ... मुखपत्र बन गया। 1961 में, आंतरिक विवादों के कारण साप्ताहिक बंद हो गया।

... डॉ. अम्बेडकर ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से कई विषयों पर काम किया। उन्होंने धार्मिक संस्थानों, धार्मिक विचारों और जाति पदानुक्रमों का पता ... उन्होंने हिंदू सामाजिक व्यवस्था और अछूतों के इतिहास का बौद्धिक उपचार किया। उन्होंने महाड़ का सत्याग्रह, पहाड़ों का सत्याग्रह, महारों की जमीन, ... श्रमिकों व मजदूरों, खोटी मसला, गुलामी जैसे कई मुद्दों को उठाया। अखबार तो बैलेट पेपर होता है, लेकिन डॉ. अम्बेडकर ने इसे लिखा है। वे शुद्ध ... प्रवाहपूर्ण मराठी भाषा में लिखते थे। उनका तर्क तार्किक था। हिंदू धर्म पर नोट्स और अस्पृश्यता पर पोरखेल जैसे उनके लेख यादगार रहे हैं।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा स्थापित समाचार पत्र उनकी उम्र के लगभग आधे हैं। उनके जीवन के 32-33 वर्ष शिक्षा पर व्यतीत हुए। तत्
पत्र-पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों की स्थापना की तथा जन-जागृति एवं बहुजन समाज के कल्याण के लिए अपना संपूर्ण जीवन समाचार-पत्रों
सर्वप्रथम शिक्षा को महत्व देते हुए समाचार पत्रों को प्राथमिकता देते हुए बहुजन समाज के लिए समुदायोन्मुख कार्य करने का समय दिया गया।
की विविध प्रकृति को उनके द्वारा सार्वजनिक पाठकों के लिए लिखे गए पत्रों से देखा जा सकता है। यह देखा गया है कि बाबासाहेब ने पत्रकारित
विषयों और मुद्दों को संभाला। इसमें खेतिहर मजदूरों, किसानों, मजदूरों, बच्चों, महिलाओं, देवदास की समस्याओं आदि की समस्याएँ दिखाई दे
अखबार में लोगों के सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ राजनीतिक मुद्दों और राजनीतिक घटनाओं को भी दर्शाया जाता है। डॉ। समाचार पत्र क्षेत्र में
अम्बेडकर के कई आलोचक थे। उनके आंदोलन, उनके मानव मुक्ति कार्यों, अखबारों के लेखों पर विरोधियों की पैनी नजर थी। वे ऐसे आलोचकों
उत्तर देकर मुंहतोड़ जवाब देते थे।

डॉ। बाबासाहेब की कलम में तलवार की धार थी। इसलिए वे सच्चाई पेश करने और समाज को न्याय दिलाने में कभी पीछे नहीं हटे। उन्हों
जागरूक करने का बड़ा काम किया। आज के आधुनिक तकनीक के युग की तरह अम्बेडकरी पत्रकारिता नहीं थी। गांव-गांव, गांव-गांव में डॉ.
के अखबार पढ़े जा रहे थे। अखबारों में समाचारों और लेखों पर चर्चा होती थी और उन चर्चाओं से प्राप्त ज्ञान से समाज, पाठक और लोग जा
थे और लड़ने को तैयार हो रहे थे। डॉ। बाबासाहेब की पत्रकारिता से आज भी कई सबक सीखे जा सकते हैं। लेकिन लगातार इस बात का मल
उनकी पत्रकारिता की उपेक्षा की गई।

संदर्भ किताबें:

1) खरात शंकरराव डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के पत्र
2) हिवराले सुखराम - पत्रकार डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर दाई सम्राट - 19 और 21 मई 2012
3) डॉ। बाबासाहेब और भारतीय संविधान, डॉ. बाबासाहेब कस्बे प्रकाशक और मुद्रक: उषा वाघ सुगावा प्रकाशन,
4) पुणे पांचवां संस्करण जनवरी 2014
5) डॉ। बाबासाहेब अम्बेडकर लेखों का संग्रह, सितंबर 2009, प्रो. आचार्य अत्रे

2024

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च–अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों मे युगबोध: एक अध्ययन–निशा यादव
कलिकथा: वाया बाइपास में मारवाड़ी परिवार का चित्रण–डॉ० दुर्गावती सल्लाम
भारतीय रक्षा उद्योग का स्वदेशीकरण व रक्षा उत्पादन नीति–सुबोध मणि त्रिपाठी
भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी कहानी–डॉ० चन्द्रशेखर यादव
भारत के वर्तमान संसदीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ–महेन्द्र प्रताप बॉयला
वेब धारावाहिक सेक्रेड गेम्स में अभद्र भाषा एवं गालियों के अतिशय प्रयोग का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अविनाश त्रिपाठी
नयी पंचायती व्यवस्था में महिलाएं–बबीता मीणा
भारतीय संस्कृति तथा शिक्षा–अरुण अग्रवाल; डॉ० राजेंद्र कुमार मिश्रा
इतिहास लेखन में मार्क्सवाद के सैद्धांतिक तत्व–प्रोफेसर (डॉ०) निधि रायजादा; सुषमा रानी
भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल की भूमिका–प्रभु दयाल जयंत
कोविड-19 का युवाओं के रोजगार पर प्रभाव एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–श्यामल किशोर ठाकुर
हिन्दी रचनाओं में दलित आत्मकथा का अध्ययन–राजेश रंजन कुमार
सनातन धर्म संस्कृति और वनवासी संस्कृति का साम्मिलन: एक विश्लेषण–डॉ० धीरेन्द्र त्रिपाठी
अनुसूचित जनजाति की ऐतिहासिक और संवैधानिक पृष्ठभूमि–एमलिन केरकेट्टा
दूधनाथ सिंह की कहानी 'माई का शोकगीत': स्त्री- अस्मिता की खोज–पवन कुमार शर्मा; डॉ० सुरेंद्र प्रसाद सुमन
जैन मुनि की आहारचर्या–साध्वी धर्मरत्ना श्री; डॉ० समणी अमल प्रज्ञा
वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में रवीन्द्र नाथ टैगोर के विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० परीक्षित लायेक
राष्ट्र निर्माण मे जनपदीय कवियों की भूमिका: छत्तीसगढ़ी कवियों के विशेष संदर्भ में–सतीश शर्मा
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् जनजातीय किशोरियों की शैक्षिक निष्पत्ति अभिप्रेरणा का उनकी संवेगात्मक स्थिरता के संदर्भ में अध्ययन –सपना शाही
प्रशिक्षु शिक्षकों के शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन–ज्योथी करनवार; डॉ० राकेश कुमार डेविड
शैक्षणिक प्रक्रिया में इंटरनेट की भूमिका पर अध्ययन–कमलजीत कौर; डॉ० राकेश कुमार डेविड
'ग्लोबल गाँव के देवता: औद्योगीकरण की आँधी में उजड़ते गाँव और पर्यावरण'–कु० आशा मिश्रा
रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की कथावस्तु (तात्विक विवेचन)–नीलम
वाल्मीकि रामायण में चित्रित स्त्री छवि–डॉ० नीरज कुमारी
रीतिकालीन कवियों के काव्य में सौंदर्य चेतना–रीना मलिक
समाज म नारी उत्पीड़न के अनुपात का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर
शिबू सोरेन–स्मिता तिग्गा
'हो' जनजाति की प्रशासनिक व्यवस्था–डॉ० विजया बिरूवा
झारखण्ड में संताल जनजाति के प्रमुख नृत्य–पूनम टोप्पो
छोटानागपुर में औपनिवेशक नीति, जनजातीय समाज एवं भूमि व्यवस्था पर प्रभाव–ओडिल एक्का
राँची के प्रमुख सांस्कृतिक धरोहर–डॉ० पुष्पा कुमारी
सोनार किले का एतिहासिक महत्व–पंचाल मायाबेन ए
जैन साधना पद्धति में स्वाध्याय एवं ध्यान–डॉ० दुधनाथ चौधरी
अमृतराय के उपन्यासों में नारी विमर्श–डॉ० स्वाती दुबे
विवेकी राय के कथा.साहित्य में दलित विमर्श–डॉ० मधुरबाला यादव; कृष्ण कुमार
छात्रों एवं छात्राओं के आत्मविश्वास पर पारिवारिक, वातावरण के प्रभाव का अध्ययन–डॉ० रश्मि शर्मा; प्रीती माहेश्वरी

समाज मे नारी उत्पीडन के अनुपात का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर

सहयोगी प्राध्यापक, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,अक्कलकुवा, नंदूरबार

...एव सभ्य राष्ट्रों कि आधार शिला मानव अधिकार है। विश्व के समस्त मानवो को समान रूप से प्रतिबंधो तथा दबाव से मुक्त कर उनके ... का स्वर्ण युग लाना है। लॉस्की के अनुसार अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितीया है जिनके अभाव मे सामान्यत: कोही भी व्यक्ति अपने ... का विकास नही कर पाता है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था कि, किसी समाज की महिलाओ कि प्रगती पर ही समाज के प्रगतिका अंदाज ... जाता है। इन्ही विचारो को आज के स्थिती मे जानने की कोशिश की गई है।

...ओ की समाज मे क्या स्थिती है, कौन-कौनसे क्षेत्रोमें महिलाओ पर अन्याय हो रहा है, इस सभी मुद्दो का प्रस्तुत शोध पत्र मे अध्ययन किया गया ...

...काल में भारत जैसे देशो में नारी को समाज मे उचित स्थान नही था। लगभग सभी क्षेत्रोमें नारी को दुय्यम स्थान था। लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात ... बदलाव आए है कि स्त्री वर्गो को थोडाबहुत सन्मान मिल रहा है।

...अध्ययन के उद्देश:

- भारत स्वतंत्रता के पश्चात अधिकार की क्या स्थिती है इसका अध्ययन करना
- महिलाओ पर होने वाले अन्याय, अत्याचार की क्या स्थिती है इसका अध्ययन करना

...अध्ययन पद्धती:

...का अध्ययन करणे हेतू दुय्यम पद्धती का चयन किया है। जिसमे मासिक, किताबे, अखबार, शोधपत्राव्दारा प्रकाशित जानकारी प्राप्त की गई। विज्ञान ... युग मे हमारा विकासोन्मुख देश जहाँ प्रगती के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर है, वही आज भी समाज का आदा हिस्सा कहे जानेवाली महिलाएं विभिन्न ... कि शिकार हो रही है। इतिहास के पन्ने पलटने पर पता चला है, कि पुर्व-आर्यन-युग (इ.पू.३०००-ई.पू.२०००) मे महिलाएं समाज मे अपना विशिष्ट ... रखती थी। उस समय का साहित्य उपलब्ध नही है इसलिये निश्चित रूप से महिलाओ कि सामाजिक स्थिती के बारे मे कुछ नही कहा जा सकता लेकिन ... और मोहनजोदडो के मुक-प्रमाण बताते है कि, अय्यो के पुर्व के सिंधू समाज मे महिलाएं विशेष स्थान पाती थी। समकालीन मेसोपोटेमिया सभ्यता ... आधार पर कुछ इतिहासकार मानते है कि सिंधू समाज, मातृसत्ताक था और राज्य व संपत्ती का अधिकार कन्याओ को मिलता था। आधुनिक केरल राज्य ... मातृसत्ताक पारिवारिक व्यवस्था आज भी अस्तित्व मे है, जिससे यही धारणा की पुष्टी होती है, की प्राचीन भारतीय समाज मे महिलाओ को स्थिती पुरुषो ... मुकाबले श्रेष्ट थी। सिंधू सभ्यता के विलोप के बाद समाज मे महिलाओ के अधिकार का पतन शुरू हुआ, इसी कारण समाज मे तब से आजतक महिलाओ ... अनेक स्वरूपो मे अत्याचार होने के सबुत मिलते है। उन्ही समस्याओ मे से महिलाओ पर होने वाले उत्पिडन का अभ्यास करणे का प्रयास किया गया ... समाज मे होने वाले अपराधो का अध्ययन अनेक विद्वानोने किया है, जिसमलोंब्रोसो, फेरी, टॉर्गेट, हिले, थामस, और जैनेकि, पार्क और अर्नस्ट, पारमेली, ... और गिलीन मुख्य है। भारत मे होने वाले अपराधो का अध्ययन डॉ. सुशील चंद्र, डॉ. सेठना, डॉ. खन्ना, डॉ. वर्मा, डॉ. राधाकमल मुखर्जी जैसे विज्ञानो ... है। समाजशास्त्रीयो द्वारा महिला अपराध के कुछ कारण बताये गये है, जीन कारणोसे अपराध बढते वे अग्र प्रकार है, (१) अशिक्षा (२) पुरुष प्रधानता ... महिला पुरुष भेदभाव (४) सामाजिक धार्मिक कुरितीया (५) परिवारिक तणाव (६) आर्थिक व्यवस्थाओं मे परिवर्तन (७) कानुनी जागरूकता ... समाजशास्त्रीयो द्वारा दिये गये सभी कारण महिला अपराध के लिये जिम्मेदार है। किंतू आधुनिक समाज मे महिला उत्पिडन के ५०% कारण प्रमुख रूप ... आर्थिक व्यवस्थाओं मे परिवर्तन, महिला शिक्षा जागरूकता,कानुनी जागरूकता है। भारतीय समाज मे महिलाओ पर अपराधिक मामले वैदिक काल से होने ... विवरण कही संदर्भ ग्रंथो से मिलता है। मुगल काल मे महिलाओ की स्थिती और भी दयनीय हो गयी थी प्इस समय बालविवाह बहुत बढ गये थे तो ... विधवा विवाह कि अनुमती किसी को नहीं थी। सती-प्रथा और परदा प्रथा अपने चरम पर थी और महिला शिक्षा लगभग समाप्त हो चुकी थी प्वर्तमान भौतिकता ... आधुनिकता के इस युग मे लोगो की मानसिकता,उनके सोचने के ढंग और उनकी कार्यशैली में तेजीसे बदलाव आ रहे है ᳴ व्यक्ती की मानसिकता में ... इस बदलाव के कारण समाज मे अपराधों कि स्वरूपों, तीव्रता, वारंवारता और उनकि गंभीरता में लगातार वृध्दी होती जा रही हौ जैसे-जैसे समाज मे ... आधीकता बढ रही है, वैसे-वैसे महिलाओ से संबंधित अपराधो का ग्राफ मी चढ रहा है प्समुचे भारतवर्ष में महिलाओ के खिलाफ होने वाले अपराध ९. ...(१९९९)प्रतिशत सालाना कि दर से बडा रहे है। इससे पिछले वर्ष यह बढोतरी ३.३ फिसदी थी। आलोच्य वर्ष (१९९९) मे.महिला संबंधी अपराध कुल

अपराधों का लगभग १४.२ प्रतिशत थे। महिलाओं के खिलाफ होने वाले कुछ गंभीर अपराध जैसे, बलात्कार, पारिवारिक हिंसा, अपहरण, दहेज हेतु अत्याचार, छेडछाड, यौन उत्पिडन,लडकियो कि करील फरोक्त और महिलाओ का अश्लिल चित्रण ऐसे अपराध है जिन्होने महिला-अस्मिता को झंकझोर रखा।

आज बलात्कार जैसे मामले भारत में तेजीसे बघ रहे है,ज्यो कि,सन १९९८-१९९९ में बलात्कार के मामले पिछले वर्ष कि अपेक्षा ६.६फिसदी कि दर्ज की गई पुरे देश मे हुये बलात्कारो मे से २७.७ फिसदि अकेले मध्यप्रदेश में दर्ज किए गये। एक दुर्भाग्यपुर्ण तथ्य यह है लगभग ८७.४ फिसदी मे बलात्कार पिडीत महिला का पहले से हि जानकर, परिचित था। लगभग ३०.१ फिसदी मामलो में पडोसी ही बलात्कार में लिप्त पाए गयए इतना ही पुरे विश्व मे बलात्कार के मामलो में बढोतरी होने के सबूत मिलते है।

तालिका : विश्व के विभिन्न देशो मे बलात्कार के मामलो में वृध्दी (प्रतिशत)

अ.क्र.	देश	बलात्कार के मामलो वृध्दी
१	ऑस्ट्रेलिया.	६.६०
२	बलगारिया.	९.००
३	कनाडा .	९.९०
४	फिनलंड.	१३.६०
५	फ्रान्स.	२.००
६	हेलास.	१.६०
७	भारत.	०.६०
८	इंडोनेशिया.	१.५०
९	जापान.	५.२०
१०	पोलंड.	२.७२
११	स्पेन.	३२.७०
१२	संयुक्त राज्य अमेरिका.	

(स्त्रोत : इंटरपोल डाटा. १९९९)

तालिका के माध्यम से विश्व के विभिन्न देशो मे बलात्कार वृध्दीदर दर्शाया गया है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि,कनाडा, न्युझीलंड, ग्रेट ब्रिटन और संयुक्त राज्य अमेरिका में ६ में से एक महिला के साथ जीवन में एकबार बलात्कार होता है। बलात्कार के अलावा महिला संबधी अन्य अपराधो में सन २००० में बढोतरी दर्ज की गई है। सन २००० में पिछले वर्ष के मुकाबले बलात्कार के कुल मामलो में ६.६ फिसदी उछाल आया, दहेज के लिये होने वाले मौते ४.४ फिसदी बढी, तो घरेलु अत्याचार के मामलो में ४.५ प्रतिशत का उछाल आया है। छेडछाड कि घटनाएं १.९ फिसदि बढि, यौन उत्पिडन के मामलो में २४.५ फिसदी कि बढोतरी दर्ज की गई है। कनाडा, न्युझीलंड नार्वे, और संयुक्त राज्य अमेरिका मे तो एक- तिहाई बच्चियों व किशोरियो के साथ यौन दुर्व्यवहार किया जाता है। एशिया में अनुमानत:१० लाख बालिकाओ को वेश्यावृत्ती के लिए प्रेरित किया जाता है, इसी कारण जबरन वेश्यावृत्ति के मामलो में १.६ फिसदी कि वृध्दी हुई,जबकी मिडीया आदी में महिलांनो के अश्लिल चित्रण के मामलो में कुल १९८.२ फिसदी वृध्दी हुई। वैसे तो महिला संबधी उपरोक्त अपराध का दंश प्रत्येक वर्ग की किसी भी महिला को झेलना पडता है, लेकिन बलात्कार और यौन-उत्पिडन के अधिकतर मामले, समाज के कमजोर वर्ग कि महिलाओ के खिलाफ ही हुई है। इसके साथ ही राष्ट्रीय अपराध रिकार्डस ब्युरो-२००७ के अनुसार पारिवारिक हिंसा ६८.०९ प्रतिशत, दहेज प्राप्ती संबंधित हिंसा ८५.७५ प्रतिशत और घरेलु सामाजिक हिंसा ७०.७३ प्रतिशत पाई जाती है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि, चिली, मेक्सिको, पापुआ, न्युगिनी और कोरियाई गणतंत्र में दो तिहाई विवाहित युवतियो के साथ परिवार में हिंसक व्यवहार किया जाता है। महिलाओ की जितनी हत्याएं होती है, उनमें बांग्लादेश, ब्राजील, कीनिया, पापुआ, न्यूगिनी और थाईलैंड आधी से अधिक महिलाओं की हत्या वर्तमान या भूतपूर्व पतियों द्वारा की जाती है। महिलाओं की आत्महत्या का अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे बड़ा कारण वैवाहिक झगड़े एवं हिंसा होती है।

उपरोक्त आकड़ो से स्पष्ट है कि भूमंडलीकरण, कंप्यूटर और आधुनिकीकरण के इस युग में भी महिलाएं विभिन्न प्रकार के अपराध झेलने को अभिशप्त है। समाज में आए दिन होने वाले अपराध के संबंध में विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि कोई भी घटना तभी घटित होती है जब उसके कुछ कार्य कारण संबंध होंगे। यदि इन कारणों का निराकरण कर दिया जाए तो महिला अपराध की समस्या कुछ हद तक निराकरण हो सकता है।

इसलिए आधुनिक युग में महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं उनके उत्थान के लिए विभिन्न समाज सुधारक को एवं वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित हुआ है एवं समय-समय पर संगोष्ठीयों के माध्यम से इस समस्या पर व्यापक विचार-विमर्श अभी किया जा रहा है। साथ ही महिला अपराध को कम करने के लिए अनेक कानून भी बनाए गए हैं।

जिसमें महिला न्यायालय की स्थापना -१९९४, राज्यसभा में महिलाओं के प्रति क्रूरतापूर्ण रात निरोधक विधेयक-१९९५, बलात्कार संबंधी रोकथाम-१९९८ भारत सरकार द्वारा महिला शोषण पर रोक-२००२, घरेलू हिंसा विधेयक-२००५ आदि कानूनों का प्रावधान किया गया है।

निष्कर्ष:

विश्व 21वीं सदी में प्रविष्ट हो चुका है। नहीं विश्व व्यवस्था में महिला और पुरुष के समान अवसरों से उन्नति प्राप्त हो सकती है। जब तक विश्व में महिलाओं की आधी आबादी इस त्रासदी से मुक्त होकर पुरुषों के समान अवसर युक्त जीवन यापन नहीं कर सकेगी, विश्व विकास का सपना नितांत अधूरा ही रहेगा। अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार हर क्षेत्र में महिलाओं को जब समान अवसर उपलब्ध होंगे, तभी सही और श्रेष्ठ विकास होगा। यदि न विश्व में खासकर भारत में पिछले वर्षों में काफी प्रयत्न हुए हैं, पर अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

संदर्भ :

1. डॉ.सिंह बी.एन.(१९९८) अपराध शास्त्र: साहित्य रत्नालय; गिलिश बाजार कानपुर
2. डॉ.सिंह निशांत (२००४) समाज राजनीति और महिलाएं; दशा और दिशा; राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
3. [illegible] परिपूर्णानन्द (१९९८) अपराध के नए आयाम तथा पुलिस की समस्याएं; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. अन्सारी एम.ए.(१९८९) नारी चेतना और अपराध; पंचशील प्रकाशन; जयपुर

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 3 मई–जून 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की
मानक शोध पत्रिका

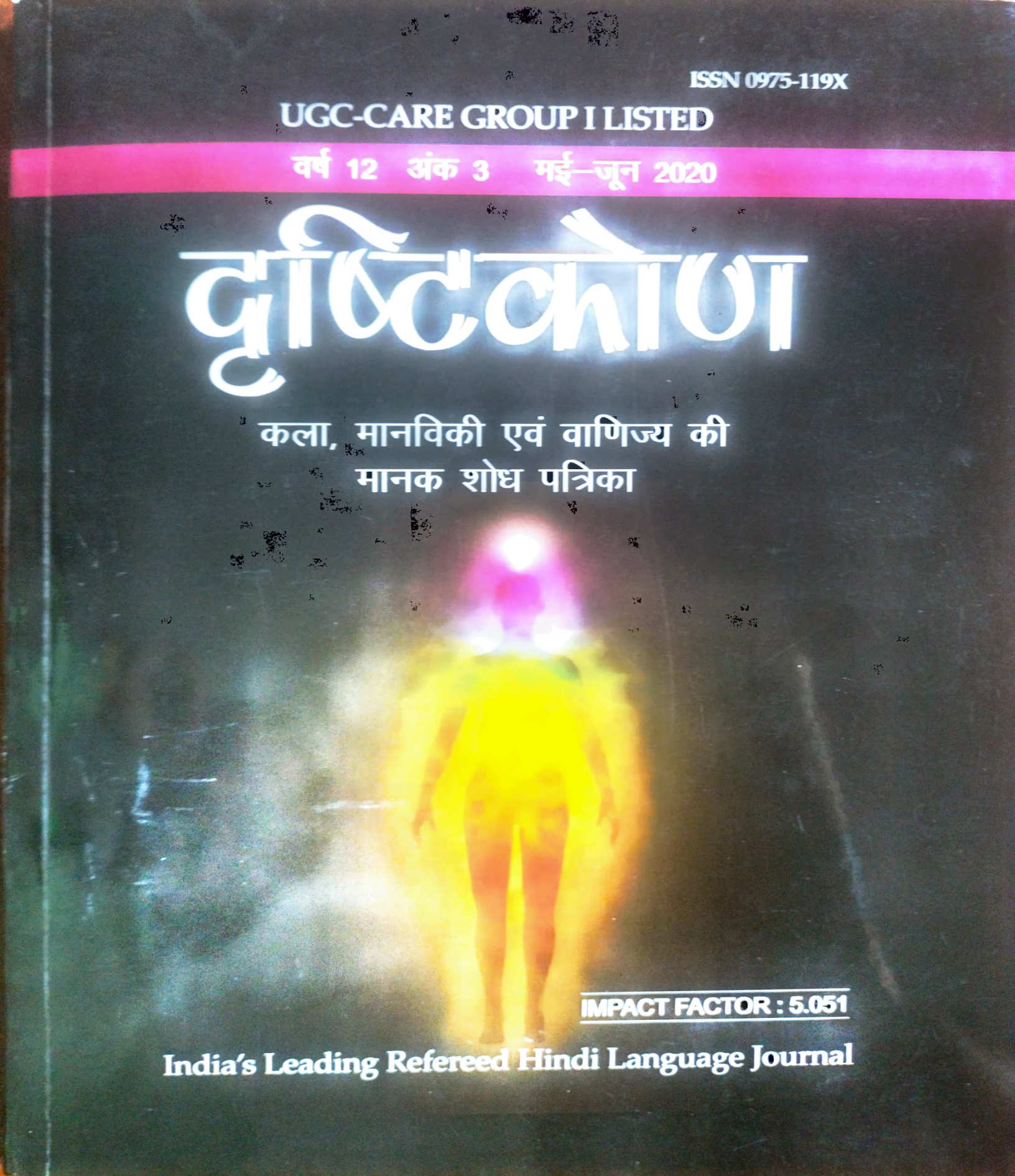

IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

अध्यापक प्रशिक्षकों के वृत्तिक विकास हेतु कौशल दक्षता की आवश्यकता एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य के कौशल का अध्ययन
–डॉ० बृजेश कुमार 212

अष्टछाप संगीत (हवेली संगीत) और काव्यत्व–अंकिता मिश्रा 213

बीसवीं सदी में फिरोजाबाद काँच उद्योग का ऐतिहासिक विकासक्रम (1900 ई0-1990 ई0)–नवनीत सारस्वत 213

ग्रामीण आवास योजनाओं की समस्याएं: राजस्थान के भरतपुर जिले के सन्दर्भ में–नवीन कुमार पहाड़िया 214

भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता: स्वरूप एवं इसको प्रभावित करने वाले कारक–मोनिका विजय 214

पंचायतों के सुदृढ़ीकरण के कुछ सुझाव–डॉ० अजीत 215

आर्यसमाज आंदोलन का सामाजिक क्षेत्र में योगदान–डॉ० रघु महेंद्र सिंह 216

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सम्पूर्ण समायोजन का अध्ययन–तुलसी राम 216

योगिता यादव की कहानी 'भेड़िया' व 'झीनी-झीनी बिनी रे चदरिया' में नारीवादी दृष्टिकोण–डॉ० सुधा रानी 217

भारत में पत्रकारिता का उद्भव एवं राजनैतिक चेतना के विकास में पत्रकारिता का योगदान(1768 ई. - 1857 ई.)
–डॉ० शिवकुमार मिश्रा 217

राजस्थान के दौसा जनपद की ऐतिहासिक बावड़ियाँ–महेन्द्र प्रताप सिंह; डॉ० आलोक कुमार 217

डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक विचार–डॉ० शिखा सक्सेना 2183

जैन तत्त्वविद्या के अन्तर्गत पंचमहाकल्याणक का समीक्षात्मक अध्ययन - प्राकृत साहित्य के संदर्भ में
–विमलेश राम; डॉ० दुधनाथ चौधरी 2186

अन्त: कृदशा एक शोध परक अध्ययन–विनय कुमार सिंह; डॉ० नवल किशोर पाण्डेय 2189

अर्धमागधी प्राकृत साहित्य में प्रतिपादित शिक्षा विमर्श–सुष्मिता सौरभ; डॉ० अरविन्द कुमार 2192

हरियाणा विधानसभा चुनाव 2014 का विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० अर्चना 2194

डॉ० अम्बेडकरजी का राष्ट्रवाद एक नई सोच–प्रो० डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर 2198

रघुवीर सिंह 'अरविन्द' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर–राजू सिंह 2202

मुक्तिबोध की कविता 'ब्रह्मराक्षस'–डॉ० सुधा राजलक्ष्मी 2208

डॉ० अम्बेडकरजी का राष्ट्रवाद एक नई सोच

प्रो० डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर

सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभाग प्रमुख, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, अक्कलकुवा, महाराष्ट्र

परिचयः

भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्म ब्रिटिशों द्वारा केन्द्रीय प्रान्त (अब मध्यप्रदेश में) में स्थापित नगर व सैन्य छावनी हुआ था। में रामजी मालोजी सकपाल जो आमी कार्यालय के सूबेदार थे और भीमाबाई की १४ बी अंतिम संतान थे। उनका था और ये अम्बावा नगर जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में है, से अध्यधित था। वे हिंदू महार (दलित) रखते थे, जो अछूत कहे जाते थे और उनकसाथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। पूर्वज लम्बे समय तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्यरत थे और उनके पिता, भारतीय सेना की मऊ छावनी थे औ यहाँ काम करते हुए वो सूबेदार के पद तक पहुंचे थे। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने और कड़ी महेनत लिए हमेशा प्रोत्साहित किया। स्कूली पढ़ाई में सक्षम होने क बावजूद अम्बेडकर और अन्य अस्पृश्य बच्चों को विद्यालय बिठाया जाता था और अध्यापको द्वारा न तो ध्यान दिया जाता था, न ही उनकी कोई सहायता की। उनको कक्षा क अन्दर अनुमति नहीं थी, साथ ही प्यास लगने पर कोई उधी जातो का व्यक्ति उचाई से पानी उनके हातों पर डालता था, क्यू पानी और पानी के पात्र को भी स्पर्श करने की अनुमति नहीं थी। लोगो कमुताबिक ऐसा करने से पात्र और पानी दोनों जाते थे। आमतौर पर यह काम स्कूल के चपरासी द्वारा किया जाता था जिसकी अनुपस्थिति में बालक अम्बेडकर को के ही रहना पड़ता था। बाद में उन्होंने अपनी इस परिस्थिती को 'ना चपरासी, ना पानी' से लिखते हुए प्रकाशित किया। रामजी सकपाल सेवानिवृत्त हो जाने के बाद वे सहपरिवार सातारा चले गये और इसके दो साल बाद, अम्बेडकर की माँ हो गयी। बच्चों की देखभाल उनकी चाची ने कठिन परिस्थितियों में रहते हुए की। रामजी सकपाल के केवल तिन बेटे, आनंदराव और भीमराव और दो बेटियों मंजुला और तुलासा। अपने भाइयो और बहनों में केवल अम्बेडकर ही स्कूल की सफल हुए और इसकबाद बड़े स्कूल में जाने में सफल हुए। अपने एक देशस्त ब्राह्मण शिक्षक महादेव आंबेडकर जो उनसे स्नेह रखते थे के कहने पर अम्बावडेकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अम्बेडकर जोड़ लिया जो उनके गाव कनाम पर आधारित था। भीमराव अम्बेडकर को आम तौर पर बाबासाहेब के नाम से जाने जाता है, वे एक भारतीय न्यायशास्त्री, राजनेता और सामाजिक सुधारक थे जिन्होंने आधुनिक बुद्धिस्ट आन्दोलनों को प्रेरित किया और सामाजिक अंतर/भेदभाव दलितों के साथ अभियान चलाया, स्त्रियों और मजदूरों के हक्को के लिए लड़े। वे स्वतंत्र भारत कपहले विधि शासकीय और साथ ही भारत के संविधान निर्माता भी थे। आंबेडकर एक बहोतहोशियार और कुशल विद्यार्थी थे, उन्होंने विश्वविद्यालय और लन्दन स्कूल ऑफ इकनोमिक से बहोत सारी कानूनी डिग्री प्राप्त कर रखी थी और अलग-अलग डॉक्टरेट कर रखा था, उनकी कानून, अर्थशास्त्र और राजनितिक शास्त्र पर अनुसन्धान ककारण उन्हें विद्वान की पदवी दी प्रारंभिक करियर में वे एक अर्थशास्त्री, प्रोफेसर और वकील थे। बाद में उनका जीवन पूरी तरह से राजनितिक कामों गया, वे भारतीय स्वतंत्रता के कई अभियानों में शामिल हुए, साथ ही उस समय उन्होंने अपने राजनितिक हक्को और दलितों सामाजिक आजादी, और भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए अपने कई लेख प्रकाशित भी किये, जो बहोत प्रभावशाली हुए। १९५६ में उन्होंने धर्म परिवर्तन कर के युद्ध स्वीकारा, और ज्यादा से ज्यादा लोगो को इसकी दीक्षा भी देने लगे। १९९० उपरांत आंबेडकर को सम्मान देते हुए, भारत का सबसे बड़ा नागरिकी पुरस्कार, भारत रत्न जारी किया। आंबेडकर की म्हणता सारे किस्से और उनके भारतीय समाज के चित्रण को हम में जाकर देख सकते है।

अम्बेडकरजी का राष्ट्रवाद एक आधुनिक सोचः

भीमराव को जानने और समझने की सबसे बड़ी सीमा यह रही है कि या तो उनकी अनदेखी की गयी, या फिर उनकी पूजा की गयी. ज्यादा लोग ऐसे हैं, जिन्होंने भीमराव के जीवन के किसी एक पहलू को उनका पूरा स्वरूप मान लिया और उस टुकड़े में ही ये भीमराव का समग्र चिंतन तलाशते रहे. भीमराव के लोकजीवन का विस्तार इतना बड़ा और विशाल है कि उसके किसी एक खंड की विशालता से विस्मित होना बिल्कुल मुमकिन है. कई लोग इस बात से चकित है कि अछूत परिवार में पैदा हुआ एक बच्चा अपने दौर का सबसे बड़ा विद्वान कैसे बन गया कोई कहता है कि भीमराव संविधान निर्माता थे, जो कि वे थे. कुछ लोगों की नजर में भीमराव अपने दौर के सबसे बड़े अर्थशास्त्री थे, जिनके अध्ययन के आलोक में भारतीय रिर्वज बैंक की स्थापना हुई, भारतीय मुद्रा और राजस्व का जिन्होंने विस्तार से अध्ययन किया. कई लोगों की नजरों में भीमराव दलित उद्धारक है, तो कई लोग हिंदू कोड बिल के रचनाकार के रूप में उन्हें ऐसे शख्स के रूप में देखते हैं, जिन्होंने पहली बार महिलाओं को पैतृक संपत्ति में हिस्सा दिलाने की पहल की और महिला समानता की बुनियाद रखी श्रम कानूनों को लागू कराने से लेकर नदी घाटी परियोजनाओं की बुनियाद रखनेवाले शख्स के रूप में भी भीमराव को जाना जाता है. भीमराव के कार्यों और योगदानों की सूची बेहद लंबी है. लेकिन, इन सबको जोड़ कर भीमराव की जो समग्र तसवीर बनती है, वह निस्संदेह एक राष्ट्र निर्माता की है. भीमराव का भारतीय राष्ट्र कैसा है? क्या वह राष्ट्र एक नक्शा है, जिसके अंदर ढेर सारे लोग हैं? क्या राष्ट्र किसी झंडे का नाम है, जिसे कंधे पर लेकर चलने से कोई राष्ट्रवादी बन जाता है?. क्या राष्ट्र एक तस्वीर है, जिसमें एक महिला भगवा ध्वज लेकर शेर की पीठ पर बैठी है, जिसे राष्ट्रमाता मान कर उसकी जय- जयकार करना जरूरी है? क्या भूगोल ने, पहाड़ और नदियों ने अपनी प्राकृतिक सीमाओं से घेर कर जमीन के एक टुकड़े को राष्ट्र का रूप दे दिया है? या फिर क्या हम इसलिए एक राष्ट्र है कि हमारे स्वार्थ और हित साझा है? भीमराव का राष्ट्र इन सबसे अलग है. धर्म, भाषा, नस्ल, भूगोल या साझा स्वार्थ को, या फिर इन सबकसमुच्चय को, भीमराव राष्ट्र नहीं मानते. भीमराव का राष्ट्र एक आध्यात्मिक विचार है. वह एक चेतना है. हम एक राष्ट्र है, क्योंकि हम सब मानते हैं कि हम एक राष्ट्र हैं।

संविधान सभा और बाबासाहेबः

इस मायने में यह किसी स्वार्थ या संकीर्ण विचारों से बेहद ऊपर का एक पवित्र विचार है. इतिहास के संयोगों ने हमें एक साथ जोड़ा है, हमारा अतीत साझा है, हमने वर्तमान में साझा राष्ट्र जीवन जीना तय किया है और भविष्य के हमारे सपने साझा है, और यह सब है इसलिए हम एक राष्ट्र हैं. राष्ट्र की यह परिकल्पना भीमराव ने यूरोपीय विद्वान अर्नेस्ट रेनॉन से ली है, जिनका १८१८ का प्रसिद्ध वक्तव्य वाट इज नेशन आज भी सामयिक दस्तावेज है में पूछे गये तमाम सवालों का जवाब देने के लिए जब भीमराव २५ नवंबर, १९४९ को खड़े होते हैं, तो वे इस बात को रेखांकित करते हैं कि भारत आजाद हो चुका है, लेकिन उसका एक राष्ट्र बनना अभी बाकी है. भीमराव कहते हैं कि भारत एक बनता हुआ राष्ट्र है. अगर भारत को एक राष्ट्र बनना है, तो सबसे पहले इस वास्तविकता से रूबरू होना आवश्यक है कि हम सब मानें कि जमीन के एक टुकड़े पर कुछ या अनेक लोगों के साथ रहने भर से राष्ट्र नहीं बन जाता. राष्ट्र निर्माण में व्यक्तियों का में से हम बन जाना बहुत महत्वपूर्ण होता है क्या आदिवासियों की जमीन का जबरन अधिग्रहण राष्ट्रीय चिंता का कारण हैं? दुःख के क्षणों में अगर नागरिकों में साझापन नहीं है, तो जमीन के एक टुकड़े पर बसे होने और एक झंडे को जिंदाबाद कहने के बावजूद हम लोगों का एक राष्ट्र बनना अभी बाकी है. राष्ट्र बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि हम अतीत की कड़वाहट को भूलना सीखें. अमूमन किसी भी बड़े राष्ट्र के निर्माण के क्रम में कई अप्रिय घटनाएं होती हैं, जिनमें कई की शक्ल हिंसक होती है और वे स्मृतियां लोगों में साझापन पैदा करने में बाधक होती है. इसलिए जरूरी है कि खासकर विजेता समूह, उन घटनाओं को भूलने की कोशिश करे.

राष्ट्र जब लोगों की सामूहिक चेतना में है, तभी राष्ट्र है. भीमराव चाहते थे कि भारत के लोग, तमाम अन्य पहचानों से ऊपर, खुद को सिर्फ भारतीय मानें. राष्ट्रीय एकता ऐसे स्थापित होगी. वर्तमान विवादों के आलोक में, भीमराव के संबंधी विचारों को दोबारा पढ़े जाने और आत्मसात किये जाने की जरूरत है. राष्ट्र भीमराव ने कहा था, अनूठे हैं भारत के राष्ट्रवादी और देशभक्त भारत एक अनूठा देश है. इसके राष्ट्रवादी एवं देशभक्त भी अनूठे है भारत में एक देशभक्त और राष्ट्रभक्त वह व्यक्ति है जो अपने समान अन्य लोगों के साथ मनुष्य से कमतर व्यवहार होते हुए अपनी खुली आंखों से देखता है, लेकिन उसकी मानवता विरोध नहीं करती. उसे

...है कि उन लोगों के अधिकार अकारण ही छीने जा रहे हैं, लेकिन उसमें मदद करने की सभ्य संवेदना नहीं जगती. उसे पता ...लोगों के एक समूह को सार्वजनिक जीवन से बाहर कर दिया गया है, लेकिन उसके भीतर न्याय और समानता का बोध नहीं ... मनुष्य और समाज को चोटिल करनेवाले सैकड़ों निंदनीय रिवाजों के प्रचलन की उसे जानकारी है, लेकिन वे उसके भीतर ... का भाव पैदा नहीं करते हैं. देशभक्त सिर्फ अपने और अपने वर्ग के लिए सत्ता का आकांक्षी होता है मुझे प्रसन्नता है की ...भक्तों के उस वर्ग में शामिल नहीं हूं. मैं उस वर्ग में हूं, जो लोकतंत्र के पक्ष में खड़ा होता है और जो हर तरह के एकाधिकार ... करने का आकांक्षी है. हमारा लक्ष्य जीवन के हर क्षेत्र- राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक - में एक व्यक्ति एक मूल्य ...न्त को व्यवहार में उतारना है.

... सदी और २० वीं सदी के पहले दो दशकों तक हुए सामाजिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का ...निक जीवन में प्रवेश भारतीय समाज में सामाजिक क्रांति के मार्ग को निर्णायक मोड़ देनेवाला महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत रहा है. ...म्बेडकर प्रखर चिंतक, कानूनविद और सामाजिक न्याय की लड़ाई के योद्धा मात्र नहीं रहे, अपितु उनको वैचारिक दृष्टि में ... का प्रतिकार करने के साहस के साथ-साथ नैतिक पथ पर अविचल चलने की प्रतिबद्धता भी दिखाई देती है, जो मूल्यों की ... टूटते समाज को दिशा दिखाती है. भारतीय समाज में विविधता भी है और विषमता भी विविधता स्वाभाविक होती है, परंतु ... नैसर्गिक नहीं है, इसलिए इस पर विचार आवश्यक है. भीमराव के नैतिक साहस ने अपने समाज की विषमतामूलक व्यवस्था ... विरोध ही नहीं किया, उन्होंने इसके कारण, समाज और राष्ट्रीय एकता पर इसके दुष्प्रभाव और सत्य, अहिंसा तथा मानवता ... इसके स्वरूप को भी उजागर किया. आधुनिक भारत के निर्माणकर्ताओं में डॉ आंबेडकर की समाज पुनर्रचना की दृष्टि ... वर्ण आधारित जाति व्यवस्था के विरोध एवं अछूतोद्धार तक ही सीमित करके देखा जाता है, जो उनक साथ अन्याय है. ... व्यवस्था का विरोध एवं जाति आधारित वैमनस्य, छूआछूत का प्रतिकार मध्यकालीन संतों से लेकर आधुनिक विचारकों तक ... किया गया, परंतु अधिकतर संतों, राष्ट्रनायकों ने वेद व उपनिषद् की दृष्टि से सामाजिक पुनर्रचना के कार्य में सहयोग दिया, ... भीमराव ने महात्मा बुद्ध के संघवाद एवं धम्म के पच से स्वयं को निर्देशित किया.

अम्बेडकर पर भगवान बुद्ध के विचार का प्रभाव :

...म बुद्ध का कथन आत्मदीपोभव को बोधिसत्व डॉ. अम्बेडकर ने अपने जीवन में न सिर्फ उतारा, बल्कि इससे पूरे समाज ... लिए नैतिकता, न्याय व उदारता का पच आलोकित किया. भगवान बुद्ध का धम्म बुद्धिसंगत विचार एवं सदाचार परायण जीवन ... पथ है, जो सभी धर्मों में स्वीकार्य शाश्वत जीवन मूल्य का तत्व है. धम्म का पालन किसी अलोकिक सत्ता में विश्वास पर आधारित नहीं है, यह व्यक्ति की अपनी संभावनाओं, सद्गुणों एवं सच्ची स्वतंत्रता प्राप्ति की अनुभव उपलब्धि का पथ है. ग्रंथ में ... भीमराव अम्बेडकर लिखते हैं कि जीवन की पवित्रता बनाये रखना ही धम्म है, अतः धम्म का संबंध नैतिकता से है, किसी ... या मजहब से नहीं. नैतिकता समाज या संघ का अपरिहार्य आधार है. जहां एक व्यक्ति का संबंध दूसरे से है, वहां नैतिकता ... आवश्यक है. भीमराव का मानना है कि जब हम किसी समुदाय या समाज में रहते हैं, तो जीवन के मापदंड एवं आदर्शों ... समानता होनी चाहिए, यदि यह समानता नहीं हो, तो नैतिकता में पृथकता की भावना होती है और समूह जीवन खतरे में पड़ ... है. यही चिंतन है, जिसके आधार पर उनका निष्कर्ष था कि हिंदू धर्म ने दलित वर्ग को यदि शस्त्र धारण करने की स्वतंत्रता ... होती, तो यह देश कभी परतंत्र न हुआ होता. बात शस्त्र की ही नहीं, शास्त्रों की भी है, जिनके ज्ञान से वंचित कर हमने एक ... हिस्से को अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक संपदाओं से वंचित कर दिया और आज यह सामाजिक तनाव का एक प्रमुख कारण बन गया है. डॉ आंबेडकर जाति व्यवस्था का जड़ से उन्मूलन चाहते थे, क्योंकि उनकी तीक्ष्ण बुद्धि देख पा रही थी कि हमने कर्म सिद्धांत को, जो व्यक्ति के मूल्यांकन एवं प्रगति का मार्गदर्शक है, भाग्यवाद, अकर्मण्यता और शोषणकारी समाज का पोषक बना दिया है. उनकी सामाजिक न्याय की दृष्टि यह मांग करती है कि मनुष्य के रूप में जीवन जीने का गरिमापूर्ण अधिकार समाज के हर वर्ग को समान रूप से मिलना चाहिए और यह सिर्फ राजनीतिक स्वतंत्रता एवं लोकतंत्र से प्राप्त नहीं हो सकता. इसके लिए आर्थिक व सामाजिक लोकतंत्र भी चाहिए, एक व्यक्ति एक वोट की राजनीतिक बराबरी होने पर भी सामाजिक एवं आर्थिक विषमता लोकतंत्र की प्रक्रिया को दूषित करती है, इसलिए आर्थिक समानता एवं सामाजिक भेदभाव विहीन जनतांत्रिक मूल्यों के प्रति वे प्रतिबद्धता का आग्रह करते हैं. डॉ आंबेडकर की लोकतांत्रिक मूल्यों में अटूट आस्था थी. वे कहते थे जिस शासन प्रणाली से रक्तपात किये बिना लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जाता है, वह लोकतंत्र है. वे मनुष्य के दुःखों की

समाप्ति सिर्फ भौतिक व आर्थिक शक्तियों के आधिपत्य से नहीं स्वीकारते थे. वे मार्क्सवादियों से कहते हैं मनुष्य केवल रोटी के सहारे जिंदा नही रहता. उसके पास मन है, उस मन को विचारों की खाद चाहिए. धर्म मनुष्य के मन में आशा का निर्माण करता है. उसे काम करने के लिए प्रवृत्त करता है. उनके अनुसार धर्म सिर्फ पुस्तकों का वाचन या पराप्राकृतिक में विश्वास नहीं है, वह धम्म है, नीति है, जो सभी के लिए ज्ञान के द्वार खोलता है, जिसमें कोई भेदभाव या संकुचितता नहीं है।

निष्कर्ष:

अम्बेडकर ज्ञान आधारित समाज का निर्माण चाहते थे, इसलिए उनका आग्रह था शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो इस संघर्ष में धम्म का अनुसरण उनकी निष्ठा थी. भीमराव भगवान बुद्ध के जिस धम्म पथ को स्वीकारते हैं. उसमें प्रज्ञा या विचारधाम महत्वपूर्ण है. परंतु केवळ ज्ञान खतरनाक है, यह शील के बिना अधूरा है, इसलिए शील या आचरण-धम्म भी महत्वपूर्ण माना है. प्रज्ञा, शील, करुणा और मैत्री भावों से संचालित समाज ही समरस समाज हो सकता है, जो सामाजिक क्रांति का नैतिक आदर्श है. यह आदर्श भीमराव ने हम सभी को दिया है. औपनिवेशिक शासन के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता और प्रशासनिक प्रतिनिधि तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री के तौर पर उन्होंने समाज के वंचित वनों को अधिकार संपन्न करने के लिए अनेक पहले की. समाज, धर्म, अर्थव्यवस्था, कानून आदि विषयों पर उनकी कालजयी रचनाएं आज भी देश को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं. आधुनिक भारत के निर्माण में उनकी अप्रतिम भूमिका इस बात से सिद्ध होती है कि उनके उल्लेख के बिना कोई भी समकालीन चर्चा पूरी नहीं हो सकती है.

समग्र लेखन सूची-

1. घोरमोडे के.पी. कला, (2006), एजुकेशनल थिंकर, विद्या प्रकाशन, रुईकर पथ महल, नागपुर
2. पेंडके प्रतिभा सुधीर, (2010), वैश्विक शिक्षाविद, विद्या प्रकाशन, नागपुर।
3. तारासिंह, हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास और विमर्श.
4. अंगानेलाल, डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने हिंदी साहित्य को प्रेरित किया।
5. धर्मवीर, (१९८८), बालक अम्बेडकर, शेष साहित्य प्रकाशन, दिल्ली.
6. छत्रे लता (२००९), बौद्ध धर्मातील स्त्रीविचार, सुगवा प्रकाशन, पुणे. ६
7. अग्लेव प्रदीप।, (2009), समाजशास्त्री डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर, सुगावा प्रकाशन, पुणे।
8. कांबले बी. सी., (2007), समग्र अम्बेडकर जीवनी, सुगावा प्रकाशन, पुणे।
9. कांबले बीसी, (2015), डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की भारतीय संविधान की मीमासा, सुगाव प्रकाशन, पुणे।